



७ \* जिनेश्वरायनमः \* ७

## ॥ पूजावली ॥

जिसको

श्रीमान् सेठजी श्री “केशरीसिंहजी”

साह्य की आज्ञानुसार प्रका-

शित कराकर ।

## ॥ रत्नाम में ॥

॥ श्री जैन “प्रभाकर-यन्त्राज्ञय” प्रेस में छपी ॥

वीर संवत् २४३६ विक्रम संवत् १९६५ का

सन् १९०९

पहिशी पार २०००) (निष्प्रापत्र १)

—:—



## ❀ प्रस्तावना ❀



विदित होकि इस पंचमकाल में भविक लोगोंके कल्याण कारक कैयक साधन पूर्वाचार्यों ने नियत किये हैं उसमें से तीन बात मुख्य निरधार करने में आई है अन्न दान, जलदान, प्रियवाक्य प्रदान-अर्थात् ज्ञानदान करना ये तीन साधन सारभूत है सो ज्ञानदान का निर्वाह पाठशालाके विना होना मुशिकल है ऐसा विचार कर श्री स्वर्गवासी चांदमलजी की संकल्पित पाठशालाश्री अनन्त उपमा योग्य श्री यशमुनिजी महाराज की प्रेरणासे श्री जिनदत्त पाठशाला नामसे श्रीमान् केशरीसिंहजी साहब की आज्ञा से इस वर्ष में खोलने में आई है इस पाठशाला के विद्यार्थियों के लाभार्थ यह "पूजावली" नाम पुस्तक कैयक पुस्तकोंसे शुद्धकराकर "श्री जैन प्रज्ञाकर प्रेस में" छपाकर प्रसिद्धकी यह पुस्तक विद्यार्थियों को अमूल्य देनेमें आवेगी—व और साहबों को अगर जरूरत पड़ेगी तो उनको ऊपर टाइटल के लिखी कीम्मत से बी. पी. घारा भेजने में आवेगा डाकव्यव अलग पड़ेगा।

### —:संशोधक:—

आपका ऋपाभिलाषी:—

परिणत "त्रिष्णुप्रशाद शर्मा": रतलाम.

पता:—श्री जंगम युगप्रधान श्री जिनदत्त पाठशाला.

रतलाम. (माहवा)

# ॥ अथ अनुक्रमणिका ॥

सं०	विषय.	पृ०
१	मङ्गलाचरणम्.....	१
२	पांखडीगाथा.....	११
३	अष्टप्रकारी पूजा.....	१३
४	निमकउतारणा पूजा.....	२२
५	पुष्पमाला पहिरावण पूजा.....	२३
६	छुट्टा पुष्प पूजा.....	२३
७	श्री यशोविजयजी कृत ननपद पूजा. २४	
८	श्री दादाजी महा. पूजा.....	४३
९	श्री दादाजीकी अष्टप्रकारी.....	५८
१०	अष्टमी स्तुति:.....	६४
११	श्री शत्रुंजय स्तवन.....	७१
१२	श्री पार्श्वजिन स्तवन.....	६५
१३	श्री महावीरजिन स्तवन.....	६६
१४	श्री शंखेश्वर पार्श्व.....	६८
१५	श्री सीमंधर जिन स्त.....	६९
१६	श्री राणकपूर स्त.....	७०
१७	श्री गौतमाष्टक.....	७१
१८	श्री दादाजीकां प्रभाती.....	७२

॥ श्री बीतरागायनमः ॥

॥ अथ श्रीस्नात्रपूजाप्रारब्धते ॥

॥ अथ मङ्गलाचरणम् ॥  
एमो अरिहंताणं ।  
एमो सिद्धाणं ।  
एमो आयरियाणं । जयपुर  
एमो उवज्जायाणं ।  
एमो लोए सबसाहूणं ।  
एसो पंच एमुक्कारो ।  
सब पाव पणासणो ।  
मंगलाणं च सबेसिं ।  
पढमं हवई मंगलम् ।

॥ पांखमी गाथा ॥

चौतीसें अतिशय जुठं, वचनातिशय संजुत्त ।  
सो परमेश्वर देखि जवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

सिंहासण वेठा जग जाण । देखीजविण गुण  
मणि खाण ॥ जे द्दीठे तुज निम्मल जाण ॥ लहिये  
परम महोदय गाण ॥ कुसुमांजलि भेलो आदि.

जिणन्दा ॥ तोरा चरण कमल चौवीस पूजारे  
चौवीस सोत्तागी चौवीस वेरागी चौवीस जिणंदा ॥  
कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा ॥

ॐ—हीं परमात्मने अनन्तानन्ताऽऽज्ञानसक्ते जन्म  
जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय ( यह पढ-  
कर जगवंतके चरणमें टीकी दीजे )

## ॥ गाथा ॥

जो निजगुण पङ्कव रस्यो, तसु अनुभव एगत्त ॥  
सुह पुग्गल आरोपतां, ज्योत्तिस्सुरंग निरत्त ॥

## ॥ ढाल ॥

जो निज आत्म गुण आनंदी, पुग्गल संगे जेह  
अफंदी । जे परमेश्वर निज पद लीन, पूजो प्रणमो  
भव्य अदीन ॥ कुसुमांजलि मेलो शान्तिजिणंदा ॥  
तोरा चरण कमल चौवीस पूजारे चौवीस सोत्तागी  
चौवीस वेरागी चौवीस जिणंदा कुसुमांजलि मेलो  
शान्ति जिणंदा । ॐ ॥ गोकांटीकीदीजे ।

## ॥ गाथा ॥

निम्मल नाण पयास कर । निम्मल गुण संपन्न ।  
निम्मल धम्मु वएस कर । सो परमप्या धन्न ॥

## ॥ ढाल ॥

लोकालोक प्रकाशक नाणी । जविजन तारण

जेहनी वाणी । परमानंद तणी निसाणी तसु  
जगतें मुजमति ठहराणी । कुसुमांजलि मेलों नेमि  
जिणंदा ॥ तोरा चरण कमल चौवीस पूजारे चौवीस  
सोजागी चौवीस वेरागी चौवीस जिणंदा जँ० ॥

॥ गाथा ॥

जे सिद्धा सिद्धान्तिते । सिद्धिस्सन्ति अनंत । जसु  
श्यालंवन ठविय मन । सों सेवो श्ररिहंत ।

॥ ढाल ॥

शिव सुख करण जेहं त्रिकाले । समपरिणामे  
जगत निहाले ॥ उत्तम साधूनो मार्ग दिखाले,  
इन्द्रादिक जसु चरण पखाले ॥ कुसुमांजलि मेलो  
पार्श्व जिणंदा तोरा चरण कमल चौवीस पूजारे  
चौवीस सोजागी चौवीस वेरागी चौवीस जिणंदा  
कुसुमांजलि मेलो पार्श्व जिणंदा, जँ—र्ही० ॥

॥ गाथा ॥

सम्मदिठी देसंजय । साहु साहुणी सार । आचा-  
रज उवजाय मुणि । जो निम्मल आधार ॥

॥ ढाल ॥

चौविह संघे जे मन धान्यो । मोक्षतणो कारण  
निरधान्यो । विविह कुसुम वर जाति गहेवी । तसु  
चरणे प्रणमन्त ठवेवी, कुसुमांजलि मेलो वीर



जिणंदा तोरा चरण कमल चौवीस पूजेरे चौवीस  
सोत्तागी चौवीस बेरागी चौवीस जिणंदा कुसुमा  
जलि मेलो वीर जिणंदा ॥ ॐ ॥ चमरलीजे ।

॥ इति पांखनी गाथा ॥

॥ वस्तु ॥

सयल जिनवर सयल जिनवर नमिय मनरंग ।  
कह्वाणक विह संठ विय करिय सुधम्म सुपवित्त  
सुंदर ॥ सय इक सत्तरि तित्थंकर । इक सम वि-  
हरंत महियल । चवण समै इकवीस जिण । ज-  
न्म समै एकवीस । जत्तिय चावे पूजिया । करो संघ  
सुजगीस ॥ १ ॥

॥ इक दिन अचिराहुलरावती-ए-देशी ॥

जव तीजे ससकित गुण रम्या । जिन जक्ति प्रमुख  
गुण परिणम्या । तजि इन्द्रिय सुख आसंसना । करि  
थानक बीसनी सेवना । अतिराग प्रशस्त प्रचावता ।  
मन चावन्ना एहवी चावता । सवि जीव करुं  
शासन रसी । इसी चाव दया मन उद्धसी । लहि  
परिणाम एहवुं जलुं । निपजावी जिनपद निरमहुं ।  
आज बंध विचै इक जव करी । श्रद्धा संवेगथी  
थिरधरी । तिहांथी चविय लहै नर जव उदार ।  
जरते तिम ऐरवतेज सार । महा विदेह विजय  
प्रधान । मज्जा खण्ढे अवतरे जिननिधान ॥

॥ ढाल ॥

पुण्ये सुपनाहं देखे ॥ मनमे हर्ष विशेषे गजवर  
 उज्जल सुन्दर । निर्मल वृषभ मनोहर निर्जय  
 केसरी सिंह । लक्ष्मी अतिहि अविह अनुपमा  
 फूलनी माल । निर्मल शशि सुकमाल । तेज तरण  
 अति दीपै । इन्द्र ध्वजा जगजीपै । पूरण कलश  
 पंरूर । पद्म सरोवर पूर । इन्दारमें रयणायर देखे ।  
 माताजी गुण सायर । वारमें चुवन विमान । तेरमें  
 रत्न निधान । अग्नि शिखानिर्धूम । देखे माताजी  
 अनुपम । हरखी रायने जासे । राजा अर्थ प्रकाशे ।  
 जगपति जिनवर सुख कर । होसे पुत्र मनोहर ।  
 इन्द्रादिक जसु नमस्ये । सकल मनोरथ फलस्ये ।

॥ वस्तु ॥

पुण्यउदय पुण्य उदय ऊपनाजिणनाह, माता तव  
 रयणी समें देखि सुपन हरखंत जागिय । सुपन कही  
 निज कंतने सुपन अरथ सांजली सोजागिय त्रिचु-  
 वन तिलक महा गुणी । होस्ये पुत्र निधान इन्द्रा  
 दिक जसु पाय नमी करस्ये सिद्ध निधान ॥

॥ ढाल चन्द्रा-उद्दालानी ॥

सोहम पति आसन कंधियो । देई अवधे मन  
 आणंदियो । मुक्त आत्म निर्मल करण काज ।

चवजल तारण प्रगद्यो जिहाज । चव अरुवी पारग  
 सत्य वाह । केवल नाणा इहगुण अगाह शिव, साधन  
 गुण अंकुर जेह । कारण उलढ्यो आपाढ मेह । हरखे  
 विकसे तव रोमराय । बलयादिकमां निजतनु न माय  
 सिंहासनथी उढ्यो सुरिंद । प्रणमन्तो जिण आनन्द  
 कन्द । सग अरुपय पमुहा आवि तत्थ । करि  
 अञ्जलि प्रणमिय मत्थ सत्थ । मुख चाखे ऐखिण  
 आज सार । त्रिय लोय पहुदीगो उदार । रे रेनि  
 सुणोसुर लोय देव । विषयानल तापित तुम समेव ।  
 तसु शांति करण जलधर समान । मिथ्या विष  
 चूरण गरुफवान । ते देव सकल तारण समत्थ । प्रग-  
 द्यो तसु प्रणमी यहुवो सनत्थ । इम जम्पी शक्र  
 स्तव करेवी । तव देव देवी हरखे सुणेवि, गाबे तव  
 रंजा गीत गान । सुरलोक हुवो मंगलनिधान । नर  
 खेत्रे आरजवंश ठाम । जिनराज वधै सुर हर्ष धाम ।  
 पिता माता धरे उह्वव अलेष । जिनशासन मंगल  
 अति विशेष । सुरपति देवादिक हर्षसंग । संयम  
 अरथी जनने उमंग । शुद्धवेला लगने तीर्थनाथ ।  
 जनम्या इन्द्रादिक हर्ष साथ । सुखपाम्या त्रिभुवन  
 सर्व जीव । बधाई बधाईथई अतीव ॥ (तीनप्रदक्षि-  
 णादेकर यहां चैत्य वंदन करणा धूप खेवना ) ।

॥ ढाल ॥

श्रीतीर्थ पतिनो कलश मज्जन गाश्यै सुखकार॥

नर खेत्त मंरुन डुह विहंरुन ऋविक मन आधार ॥  
 तिहां राव राणा हर्ष उच्छव यथो जग जयकार  
 दिशि कुमरि अवधि विशेष जाणी लह्यो हर्ष अपार ।  
 निय अमर अमरी संग कुमरी गावती गुण ठंद ॥  
 जिन जननी पासे आवी पोंहति गहकती आणंद  
 हे माय तें जिन राज जायो शचिवधायोरम्ह अम्ह  
 जम्ह निर्मल करण कारण करिस सुश्य कम्म  
 तिहा चूमि शोधन दीप दर्पण वाय विंजण धार ।  
 तिहां करिय कदली गेह जिनवर जननी मज्जन  
 कार । घर राखकी जिन पाणी वांधी दिये इम  
 आसीस, जुग कोकाकोमी चिरंजीवो धर्म दायक ईश ॥

## ॥ ढाल इकवीसानी ॥

जग नायकजी त्रिजुवन जन हित करण । परंमा-  
 तमंजीचिदानन्द धनं सारण । जिन रयणीजी  
 दशदिस उज्जलतां धरे । शुभ लगनेजी ज्योतिष चक्र-  
 ते संचरे । जिन जनम्याजी जिन अवसर मातां धरे  
 तिण अवसरजी इन्द्रासन पिण थरहरे ॥

## ॥ त्रोटक ॥

थर हरे आसनइन्द्र चिंतै कवण अवसर एवण्यो ॥  
 जिन जन्म उच्छव काल जाणी अतिहि आनन्द ऊप  
 नो ॥ निज सिद्ध सम्पत्ति हेतु जिनवर जाणिजगते जम  
 ह्यो ॥ विकसंत वदन प्रमोद वधतैदेव नायक गहंगह्यो ॥

## ॥ ढाल ॥

तबसुरपतिजी घंटानाद करावए ॥ सुरलोकेजी  
घोषणा एह दिरावए । नरखेत्रेजी जिनवर जन्म  
हुदो अठे । तसु जगवंतेजी सुरपति मन्दर गिरगठे ॥

## ॥ त्रोटक ॥

गच्छै मन्दिर शिखर ऊपर जवन जीवन जिनतणो ।  
जिनजन्म उच्छव करण कारण आवज्यो सवि  
सुरगणो । तुम शुद्ध समकित चास्ये निर्भल  
दैवाधिदेव निहालतां ॥ आपणा पातिक सर्व जास्ये  
नाथ चरण पखालतां ॥

## ॥ ढाल ॥

इम सांजलजी सुरवर कोमी बहुमिली ॥ जिन वन्दन  
जी मन्दरगिरि साहमी चली ॥ सो हमपतिजी जिन  
जननी घर आविया । जिन माताजी वन्दी स्वामी  
वधाविया ॥

## ॥ त्रोटक ॥

वधाविया जिनवर हर्ष बहुलै धन्यहुं कृत पुण्य  
ए ॥ त्रैलोक्य नायक देव दीगो मुज समो कुण अ  
न्यए ॥ है जगत जननी पुत्र तुमचो मेरु मज्जन वर-  
करी ॥ उच्छंग तुमचे वलिय थापिस आत्मा पुण्ये  
नरी ॥

॥ ढाल ॥

सुर नायकजी जिन निजकर कमलै ठव्या ॥ पांच  
रूपेजी अतिशय महिमायें स्तव्या ॥ नाटक विधिजी  
तव वन्तीस आगल वहै । सुर कोमीजी जिन दर  
शण ने ऊमहै ॥

॥ त्रोटक ॥

सुर कोम कोमी नाचती वलि नाथ शुचि गुण  
गावती ॥ अपसरा कोमी हाथ जोमी हाव भाव दि  
खावती ॥ जय जयो तूं जिनराय जगगुरु एम दे आ  
सीस ए ॥ अह्न त्राण शरण आधार जीवन एक तूं  
जगदीश ए ॥

॥ ढाल ॥

सुर गिरिवरजी पांडुक वनमें चिहुं दिसे । गिरि  
सिद्धपरजी सिंहासन सासय वसे ॥ तिहां आणीजी  
शकें जिन खोले ग्रह्या । चउसठेंजी तिहां सुरपति  
आवी रह्या ॥

॥ त्रोटक ॥

आविया सुरपति सर्व जगते कलश श्रेणी वणाव ए ॥  
सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ ऊपधि सर्ववस्तु अणाव ए ॥  
अञ्जुय पतितिहां हुकम कीनो देव कोमा कोमीनें ॥  
जिन मज्जनारथ नीर द्यावो सत्रै सुर कर जोमिने ॥

## ॥ ढाल ॥

( शान्तिने कारणे इन्द्र कलशा चरै. )

आत्म साधन रसी देवकोमी हसी । उद्ध  
सीने धसी खीरसागर दिशी । पञ्चमदह आदि  
दहगंग पमुहा नई । तीर्थ जल अमललेवा चणी  
ते गई । जाती अलकलश करि सहस अगोत्तरा  
ठत्र चागर सिंहासणे शुचतरा । उपगरण पुष्प  
चंगेरी पमुहा लवे । आगमे चासिया तेम आ  
णिवे । तीर्थ जल चरिय करि कलश करि देवता ।  
गावतां चावतां धर्म उन्नतिरता । तिरिय नर अम  
रने हर्ष उपजावतां । धन्य अह्य शक्ति शुचि चक्ति  
श्म चावतां । समकित बीज निज आत्म आरो  
पतां । कलश पाणी मिस चक्ति जल सींचतां । मेरु  
सिहरो वरे सर्व आव्या वही । शक्र उडंग जिन  
देखि मन गहगहीं ।

## ॥ गाथा ॥

हंहो देवा अणाइ । कालो अदिठ पुव्वो । तिलोय  
तारणो । तिलोय वंधु । मिच्छत्त मोह विद्धंसणो । आ  
णाइ तिण्हा विणासणो । देवाहि देवो दिठवो  
हियय कामेहिं ।

## ॥ ढाल ॥

एम पञ्चान्त वण चुवन जो ईश्वरा । देव वैमा

णिया जति धम्मायरा । केवि कप्पष्ठिया केवि मित्ता  
पुगा केई वर रमण वयणेण अइ उच्चगा ॥

## ॥ वस्तु ॥

तत्थु अच्चुय तत्थु अच्चुय इन्द्र आदेश । कर  
जोमी सब देवगण । लेई कलश आदेश पामिय ।  
अद्भूत रूप स्वरूप जुय । कवण एह पुठंत सामी  
य ॥ इन्द्र कहे जगतारणो । पारग अन्ह परमेश ।  
नायक दायक धर्म निधि । करिये तसु अजिपेस ॥

## ॥ ढाल ॥

( तीर्थ कमलवर उदक जरीनें पुष्कर सागर आवे )  
ए-देशी-

पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा । जिनवर अंगे  
न्हामें । आतम निर्मल चाव करंता वधते शुच परि  
णामें । अच्युतादिक सुरपति मज्जन लोकपाल लो  
कान्त ॥ सामानिक इन्द्राणी पमुहा इम अजिपेक  
करंत ॥ पू० ॥ १ ॥ तव ईशान सुरिंदो सक्कं पन्न  
णेश करिसु सुपा सावो ॥ तुम्ह अंके महनाहो ।  
खिणमित्तं अन्ह अप्पेह ॥ २ ॥ तासकिंदो पजणइ ॥  
साहम्मि वल्लम्मि बहुलाहो आणाइ वं तेणं  
गिणहइ होइ कयत्थाजो ॥ ३ ॥ कलशढाले ।

## ॥ ढाल ॥

सोहम सुरपति वृषभ रूपकर ॥ न्हवण करे प्रजु



अंगे ॥ करिय विलेपन पुष्पमाल ठवी । वरआचरण  
 अचंगे ॥ सो० ॥ तव सुरवर बहु जय जय रव करै ।  
 निश्रे धरि आणन्द ॥ मोक्ष मारग सारथ पति पाम्यो ।  
 चाजस्युं हिव भव फंद ॥ सो० ॥ कोरु वत्तीस सोवन  
 उवारी । वाजंतै वरनाद ॥ सुरपति संघ अमर श्रीप्र-  
 च्चुने ॥ जननीने सुप्रसाद । सो० आणा थापी एमपयंपे  
 अम्ह निस्तरिया आज ॥ पुत्र तुमारो धणी हमारो  
 तारण तरण जिहाज ॥ सो० ॥ मात जतन करि रा-  
 खज्यो एहनें ॥ तुम सुत हम आधार ॥ सुरपति  
 च्चक्ति सहित नन्दीश्वर । करै जिन च्चक्ति उदार ॥  
 सो० ॥ नियनिय कप्प गया सहु निज्जर ॥ कहतां  
 प्रचु गुणसार ॥ दिहा केवल ज्ञान कट्याणक । इच्छा  
 चित्त मजार ॥ सो० ॥ खरतर गच्छ जिन आणा रंगी ।  
 राजसागर उवजाय ॥ ज्ञान धर्म दीपचंद सुपाठक ।  
 सुगुरु तणै सुपसाय । सो० देवचंद निज च्चक्तै गायो  
 जन्म महोच्छव ठंद ॥ बोधबीज अंकुरो उल्लस्यो ॥  
 संघ सकल आणंद ॥ सो० ॥ इति स्नात्रपूजा ॥  
 सम्पूर्ण ॥

## ॥ राग-बिलावल ॥

इम पूजा च्चगतै करो ॥ आतम हितकाज तजीय  
 विजाव निज चावना । रमतां शिवराज ॥ इमण १ ॥  
 काल अनंतै जे हुवा ॥ होस्ये जेह जिणंद ॥ संपई  
 श्रीमंदर प्रचु ॥ केवल नाण दिणंद ॥ इमण २ ॥

जन्म महोच्छ्व इण परे ॥ श्रावक रुचिवंत । विरचै  
जिनप्रतिमा तणो ॥ अनुमोदन खंत ॥ इम ॥ ३ ॥  
देवचंद जिनपूजना ॥ करतां जवनो पार ॥ जिन  
पस्मिमा जिन सारखी ॥ कही सूत्र मजार ॥ इम ॥  
॥ ४ ॥ इति स्नात्रपूजा विधिः ॥

॥ अथ अष्टप्रकारी पुजा विख्यते ॥  
॥ दोहा ॥

गंगा मागधक्षीरनिधि, ओपध मिश्रितासार ॥  
कुसुम वासित शुचिजले, करो जिनस्नात्र उदार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

मणि कनकादिक अडविध करि चरि कलश  
सकार । शुक्तरु चिजे जिनवर नमें तसु नार्हे डुरितप्र  
चार । मेरु शिखर जिम सुरवर जिन वर न्हावण  
अमान । करतां वरतां निजगुण समकित वृद्धि  
निधान ॥ २ ॥

॥ वंद ॥

हर्ष चरि अप्सरा वृन्द आवे ॥ स्नात्र करि एम  
असीस चावे ॥ जिहां लगै सुर गिरी जंबुदीवो ।  
अमतणा नाथ जीवोतु जीवो ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

विमल केवल चासन चास्करं जगति जंतु महो

दय कारणं ॥ जिनवरं बहुमान जलौघतः शुचिमनः  
 स्नपयामि विशुद्धये ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनंतानं  
 त ज्ञानशक्तये जन्म जगामृत्यु निवारणाय । श्रीम-  
 जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥१॥ इति जलपूजा ॥

## ॥ अथ चन्दन-पूजा ॥

दोहा ॥ वावना चंदन कुसकुमा । मृगमद ने घनसार ॥  
 जिनतनु लेपै तसु टले । मोह संताप विकार ॥ १ ॥

## ॥ ढाल ॥

सकलात्मताप निवारण तारण सहु जवि चित्त ॥  
 परम अनीहा अरिहा तनु चरचो जवि नित्त ॥ १ ॥  
 निजरूपे उपयोगी धारी जिनगुणगेह । चाव चंदन  
 सुह चावथी टालै डुरित अठेह ॥ २ ॥ चालण ।  
 जिन तनु चरचतां सकल नाकी । कहै कुग्रह उण्ण-  
 ता आज थाकी । सफल अनिमेषतां आजह्यांकी ॥  
 अव्यता अह्य तणी आज पाकी ॥३॥

## ॥ श्लोक ॥

सकल मोह तिमिर विनासनं । परम शीतल चाव  
 युतं जिनं ॥ विनय कुंकुम चंदन दर्शने । सहज तत्व  
 विकाश कृतेर्चये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमाण अनन्ताण  
 ज्ञानण जन्म जराण निवाण श्री मजिनेण चंदनं यजा  
 महे स्वाहाः इति यह कहकर चंदन चढावे ॥

## ॥ अथ नवअंगि स्नाव पूजा ॥

### ॥ दोहा ॥

पर उपगारी चरणकंज अनंत सक्तिस्वय मेव ।  
 श्यांथी प्रथमपूजीये आतम अनुभव सेव ॥ १ ॥  
 जानु पूजा दूसरी समाधि तूमिका जान । आतम  
 साधन ज्ञानले शुद्ध दशा पहिचान ॥ २ ॥ करपूजा  
 जिनराजकी दियो संवच्छरी दान । तेकर मुऊ म  
 स्तक ठवुं पहुंचे पद निरवाण ॥ ३ ॥ जुजवल सक्ती  
 जानके पूजाकरुं चितलाय । रागादि मल्ल हठा  
 यके आतम गुण दरसाय ॥ ४ ॥ सिरपूजा महारा  
 जकी लोक सिरोमणि स्नाव । चउगति गमन मिटा  
 यके पंचमगति संचाय ॥ ५ ॥ लिलवट पूजा सार है  
 तिलक विधिविश्राम । वदन कमल वाणि सुणे प्रग  
 टे निज गुण धाम ॥ ६ ॥ कंठ पूजा है सातमी वच  
 नातिसय वृन्द । सप्तचेद पंयतीसश्रुत अनुभव रस  
 नोकन्द ॥ ७ ॥ हृदय कमल की पूजना सदा वसि  
 चित मांहि । गुनविवेक जागेसदा ज्ञान कला घट  
 ठाय ॥ ८ ॥ नाजी मंरुल पूजके पोरुश दलको स्नावा  
 मन मधुकर मोहिरह्यो । आनंदघन चित लाय ॥  
 इति चन्दन पूजा समाप्तम् ।

## ॥ अथतृतीय पुष्प पूजा ॥

### ॥ दोहा ॥

शतपत्री वरमोगरा । चंपक जाइ गुलाव ॥ केत  
की दमणी बोलसिरि । पूजो जिनचरि ठाव ॥१॥

### ॥ ढाल ॥

अमल अखंडित विकसित सुजसुमन घन जा  
ति । लाखीणोटोरुठवी अंगीरची बहुजांति ॥ गुण  
कुसुमें निज आतम मंडित करवाचव्य । गुण रागी  
जकत्यागी पुष्य चढावो नव्व ॥ २ ॥ चाल ॥ जग  
धणी पूजतां विविध फूले । सुर वराते गिणे ढाण  
अमूले ॥ खन्तिधर मानवा जिन पद पूजे । तसुत  
णा पाप सन्ताप धूजे ॥ ३ ॥

### ॥ श्लोक ॥

विकच निर्मल शुद्धमनोरमैर्विशद चेतन चाव  
समुद्भवै । सुपरिणाम प्रसून घनैर्नवै ॥ परम तत्त्व  
मयंहियजामहे ॥ १ ॥ ओं ह्रीं परमात्मने ० पुष्पं  
यजामहे स्वाहा ॥ इति पुष्प पूजा ॥

## ॥ अथ धूपपूजा ॥

### ॥ दोहा ॥

कृष्णागरु मृगमद तगर, अंबर तुरकलोचान ।  
मेल सुगंध घनसारघन, करो जिनने धूपदान ॥१॥

## ॥ ढाल ॥

धूपघटी जिम महमहै तिम दहै पातक वृन्द ।  
 अरति अनादिनी जावे पावे मन आनन्द ॥ १ ॥  
 जेजिन पूजै धूपै नव कूपै फिरतैह । नावेपावै ध्रुव  
 घर आवै सुख अछेह ॥ २ ॥ चाल ॥ जिनग्रहे  
 वासनां धूपपूरै । मिष्ठन्त दुर्गंधता जाई दूरै ॥ धूप  
 जिम सहज उर्द्धगति स्वजावै । कारिका उच्चगति  
 जाव पावै ॥ ३ ॥

## ॥ श्लोक ॥

सकलकर्म महेंधन दाहनं विमल संवर जाव  
 सुधूपनं ॥ अशुभ पुञ्जल संगविवर्जितं । जिनपतेः  
 पुरतोस्तु सुहर्षितः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० धूपं  
 यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ इति धूपपूजा ॥ धूप अग्र  
 वत्ती खेंवे ।

## ॥ अथ दीपपूजा ॥

### ॥ दोहा ॥

मणिमय रजत ताम्रना, पात्र करी घृतपूर ।  
 वाती सूत्र कसुंवनी, करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥

### ॥ ढाल ॥

मंगलदीप वधाओ गाओ । जिन-गुणगीत । दीप  
 तणी जिम आलिका मालिका मंगलनीत । दीप

तणी शुभ ज्योति द्योति जिनमुख चंद्र ॥ निरखि  
हरखो ऋविजन जिम लहो पूर्णानन्द । १ । चाल ।  
जिन गृहे दीपमाळा प्रकाशै । तेहठी तिमिर  
अज्ञान नाशै । निजघटै ज्ञान ज्योति विकाशै । तेह  
थी जगतणा चावजासै ॥ ३ ॥

## ॥ श्लोक ॥

ऋविक निर्मल बोधविकाशकं । जिन गृहे शुभ  
दीपक दीपनं । सुगुण राग विशुद्ध समन्वितं ।  
दधतु चाव विकाश कृतेर्जनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा  
त्मने ॥ दीपं यजामहे स्वाहा ॥ इति दीप पूजा ॥  
मंगल दीप चढावे ॥

## ॥ अथ अक्षत पूजा ॥

### ॥ दोहा ॥

अक्षत अक्षत पूरसूं । जे जिन आगे सार ।  
स्वस्तिक रचतां विस्तरै, निजगुण ऋर विस्तार ॥१॥

### ॥ ढाल ॥

उज्ज्वल अमल अखण्डित मण्डित अक्षत चंग ।  
पूजत्रय करी स्वस्तिक आस्तिक चावै रंग ॥ निज  
सत्ताने सन्मुख उनमुख चावै जेह । ज्ञानादिक  
गुण गावै चावै स्वस्तिक एह ॥ १ ॥ चाल ॥ स्व-  
स्तिक पूरतां जिनप आगै । स्वस्ति श्रीचन्द्र कल्याण

जागै । जन्म जरा मरणादि अशुच जागै । नित्य  
शिव शर्म रहै तासु आगै ॥ ३ ॥

॥ श्लोकः ॥

सकल मंगल केलि निकेतनं परममंगल जावम  
यं जिनं ॥ श्रयति नव्य जना इति दर्शयन् दधतु  
नाथ पुरोक्त स्वस्तिकं ॥ १ ॥ ओं ह्रीं परमात्मने ॥  
अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ इति अक्षत पूजा । अखंरु  
चावल चढावै ।

॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥

दोहा ॥

सरस सुचीपकवान बहु । शालि दालि घृत पूर ॥  
धरो नैवेद्य जिन आगले । दुधा दोष तसु दूर ॥१॥

॥ ढाल ॥

लपनश्री वरधेवर मधुतर मोतीचूर । सिंहकेसरि  
या सेविया दालिया मोदक पूर । साकर ड्राख सिं  
घोरा नक्ति व्यंजन घृत सद्य । करो नैवेद्य जिन  
आगलै । जिम मिलै सुख अनवद्य ॥२॥ चाल ॥  
ढोवतां चोज्य परचाव त्यागे । नंविजना निज गुण  
चोज्य मांगे ॥ अह्नचणी अह्न तणी सरूप चोज्य ।  
आपज्यो तातजी जगत पूज्य ॥ ३ ॥



## श्लोकः ॥

सकल पुञ्जलसंगविवर्जितं । सहज चैतन चाववि  
लासकं । सरसजोजननव्य निवेदनात् परम निर्वृति  
चावमहंस्पृहे ॥ १ ॥ ओं ह्रीं परमात्मने ॥ नैवेद्यं  
यजामहे स्वाहा ॥ इति नैवेद्य पूजा नैवेद्य मिठाई  
पक्वान्न चढावै ।

## ॥ अथ फलपूजा ॥

### दोहा ॥

पक्व विजोरं जिनकरे, ठवतां शिवपद देई ।  
सरस मधुर रस फल गिणें, इहजिन चेटकरेई ॥ १ ॥

### ॥ ढाल ॥

श्रीफल कदली सुरंग नारंगी आंवा सार । अंजी  
र जंवीर दाकिम करणा खट्बीज सफार ॥ १ ॥  
मधुर सुस्वादित उत्तम लोक आणंदित जेह । वरण  
गन्धादिक रमणीक बहुफल ढावे तेह ॥ २ ॥ चालण  
फलचर पूजतां जगत स्वामी । मनुज गति वेहले  
सफल पामी । सकल मनुष्येय गतिचेद रंगै । ध्या  
वतां फलसमाप्ति प्रसंगै ॥ ३ ॥

## ॥ श्लोकः ॥

कटुक कर्म विपाक विनाशनं । सरस पक्वफलं  
ब्रज ढौकनं । वहति मोक्ष फलस्य प्रज्ञोः पुरः

कुरुत सिद्ध फलाय महाजनाः ॥ १ ॥ ॐ ऋं पर  
मात्मने फलं यजामहे स्वाहा । इति फलपूजा ॥  
श्रीफल सुपारी नीलाफल प्रमुख चढावे ।

॥ अथ अर्घ्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥

इम अरुविध जिनपूजना, विरचै जे थिरचित्त ।  
मानव नव सफलो करै, बाधै समकित्त वित्त ॥

॥ ढाल ॥

अगणित गुणमणि आगर नागर वंदितपाय ।  
श्रुतधारी उपकारी श्रीज्ञान सायर उवज्जाय ॥ १ ॥  
तासु चरण कंज सेवक मधुकर पद लयलीन । श्री-  
जिन पूजा गाई जिन वाणी रसपीन ॥ २ ॥ चाल ॥  
संवत गुण युग अचल इन्दु । हर्ष नरि गाइयो श्री-  
जिनेन्दु । तासु फल सुकृतथी सकल प्राणी । लहे  
ज्ञान उद्योत धन शिव निशाणी ॥ ३ ॥

॥ श्लोकः ॥

इति जिनवरवृन्दं भक्तितः पूजयन्ति । सकल गुण  
निधानं देवचन्द्रः स्तुवन्ति । प्रति दिवस मनंतं त-  
त्वमुज्जासयन्ति परम सहज रूपं मोक्ष सौख्यं श्रय-  
न्ति ॥ १ ॥ ॐ ऋं परमात्मने अर्घ्यं यजामहे-  
स्वाहा ! चारं खूणं धार दीजे ॥ इति अर्घ्यपूजा ॥

## ॥ अथ वस्त्र पूजा ॥

( वस्त्र लेके खमारहै ॥ और यह श्लोक पढे )  
 शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैल चूला ॥ सिंहासनो  
 परिमिता स्नपना वसाने ॥ दध्यक्षतैः कुसुम चंदन  
 गन्धधूपैः कृत्वाच्चनं तु विदधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥  
 तद्वत् श्रावक वर्ग एष विधिना लंकार वस्त्रादिकं पू  
 जा तीर्थ कृतां करोति सततं शक्त्या तिजक्त्यादृ  
 तः ॥ नीरागस्य निरंजनस्य विजिता राते स्त्रिलोकी  
 पतेः स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृत्तिकृते क्लेशक्षया कां  
 क्षया ॥ ॐ ह्रीं० परमात्मने० । वस्त्रेण यजामहे स्वा  
 हा ॥ वस्त्रचढावे इति अष्ट प्रकारी पूजा ॥

## ॥ अथ निमक उत्तारण पूजा ॥

अहपक्विजगापसरं । पयाहिणं मुणिवयं करिज्जणं,  
 पफुशसल्लूणत्तण लज्जियंच ॥ लूणंहु अवहरंति ॥ १ ॥  
 पिक्खेविणुं मुह् जिनवरह । दीहर नयणसल्लूण ॥  
 न्हावइ गुरुमढ्हजरिय । जलणपइस्सइ लूणं ॥ २ ॥  
 लूणउतारिह जिणवरह । तिन्निपयाहिणिदेव ॥  
 तरुतरु शब्द करंतिये । विज्जाविज्जजलेण ॥ ३ ॥  
 जंजेण विज्जवथुई । जलेण तंतहइ अत्थसइस्स ॥  
 जिण रूवा म्भरेणवि । फुट्टइ लूणं तरुतरुस्स ॥४॥  
 ए गाथा कही लूण अग्निशरण करै । पीठे लूण  
 पाणी लेई ॥ मुखें ए गाथा कहे । सबवि मुणवई जल

विजल ॥ तंतह जमरुइ पास । अहविकयंतस्स नि  
 म्मलउ ॥ निग्गुण बुद्धिपयास ॥ ५ ॥ जलण अणे  
 विणु जलणहिपास । जरविकयज्जल चावही पास  
 तिन्नि पयाहिणि दिन्नियपास । जिंम जिय  
 वुट्टै जव डुह पास ॥ ६ ॥ जल निम्मल कर  
 कमलेहि लेविणु । सुरवइ चावहि मुणिवई सेवणुं ।  
 पन्नणई जिणवर तुह पइ सरणं जय तुट्टइ लप्रई सि  
 ङ्गि गमणं ॥ ७ ॥ एकही लूण उतारी जल सरण  
 कीजै ॥ इति लूण उतारण पूजा ॥

## ॥ अथ पुष्पमाला पहिरावण पूजा ॥

उन्नय पयय जत्तस्स नियगणे संठियं कुणं तस्स  
 जिण पासै जमिय जणस्स । पिठतुह हुयवह पणुणं  
 ॥ १ ॥ सव्वो जिणप्पजावो सरिसा सरिसेसु जेण  
 रच्चन्ती सव्वन्नूण अपासे जरुस्स जमणं नसं कमणं  
 ॥ २ ॥ अच्चंत दुःकरंपिहू हुयवह निवेणेण जमैण कयं  
 आणा सव्वन्नूणं । न कया सुकयत्त मूलमिणं ॥ ३ ॥  
 यह कहकर माला चढावै ॥

## ॥ अथ बुट्टा पुष्पपूजा ॥

उवणेव मंगलेवो जिणाण मुहलाखि संवक्षिया  
 तित्ठ पवत्तण समई । तियसे त्रिसुक्का कुसुम बुठी  
 ॥ १ ॥ एकही पुष्प प्रनुआगे उछालीजे ॥

## ॥ भोरकी आरती ॥

जयजय आरति शान्ति तुमारी । तोरा चरण कम  
 लकी में जाऊं बलिहारी ॥ विश्वसेन अचिराजी  
 केनन्दा, शान्तिनाथमुख पूनमचन्दा ॥ जय० ॥ १ ॥  
 चालिस धनुष सौवन मथकाया ॥ मृगलांठन प्रभु  
 चरण सुहाया ॥ जय० ॥ २ ॥ चक्रवर्ति प्रभु पांचमां  
 सोहे सोलमां जिणवर जग सहु मोहे ॥ जय० ॥ ३ ॥  
 मंगल आरती भोरहिं कीजै, जनम जनम को  
 लावो लीजे ॥ जय० ॥ ४ ॥ करजोड़ी सेवक गुण  
 गावे, सोनरनारी अमर पद पावे ॥ जय० ॥ ५ ॥ इति  
 आरती सम्पूर्णा ॥

## श्रीमद्यशोविजयजी

### उपाध्याय कृत बनी नवपद पूजा

#### ॥ दोहा ॥

परम मंत्र प्रणमी करी । तासधरी उरध्यान ॥  
 अरिहंत पद पूजाकरो । निज शक्ति प्रमाण ॥ १ ॥

॥ काव्य, उपजातिवृत्तम् ॥

उप्पन्नसन्नाणं महोमयाणं, सप्पाग्निहेरासण संठिया  
 णं ॥ सहेसणाणंदिय सज्जणाणं, नमो नमो होउ  
 सया जिणाणं ॥ २ ॥

जुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ नमोनंत संतप्रमोद प्रधानं प्रधा  
 नाय जव्यात्मने भास्वताय ॥ यथा जेहना ध्यानथी

सौख्यज्ञाजा, सदासिद्ध चक्राय श्रीपालराजा  
 ॥ १ ॥ कन्या कर्म दुममर्मचक्रचूर, जेणें भला  
 भव्य ! नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करि पूजना जव्य  
 जावे त्रिकालें, सदा वासियों आतमा तेण काळें ॥  
 ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म उदये करीने, दिले देश  
 ना जव्यने हित धरीने ॥ सदा आठ महापाणि  
 हेर समेता, सुरेशें नरेशें स्तव्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥  
 कन्या घातिया कर्म चारे अलग्गा, भवोपग्रही  
 चार जे ठे विलग्गा ॥ जगत् पंच कल्याणके सौख्य  
 पामे , नमो तेह तीर्थकरा मोक्षगामे ॥ ५ ॥

## ॥ ढाल ॥ देशी उद्धावानि

तीर्थपति अरिहा नमूं धर्म धुरंधर धीरोजी ॥  
 देशना अमृत वरसतां, निजत्रिरज वरु वीरोजी ॥ १ ॥  
 उंछालो ॥ वरअखय निर्मल ज्ञानजासन, सर्वजाव  
 प्रकाशता । निजशुद्ध श्रद्धा आत्मजावे, चरण त्रिर  
 ता वासता ॥ जिन नाम कर्म प्रजाव अतिशय  
 प्रातिहारज शोचता, जगजंतु करुणावन्त जगवन्त  
 जविक जनने थोचता ॥ २ ॥

## प्रथमपूजा ॥

### ॥ ढाल ॥

॥ श्री पालना रासनी देशी ॥

श्रीजेन्तव वरस्थानक तप करो जेणे वाध्युंजिन

नाम । चौसठ इन्द्रपूजित जे जिन, कीजे तास  
 प्रणामरे । ऋषिका सिद्धचक्र पदवंदो, जिम चिर  
 कालेनंदोरे ॥ ऋषि० । उपशम रसनो कंदोरे । ऋ०  
 रत्नत्रय नो वृन्दोरे ॥ ऋ० ॥ सवै सुरनर इन्दोरे ।  
 ऋ० । सि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जेहनेहोय कल्या  
 णक दिवसे नरकें पिण उजवालुं ॥ सकल अधिक  
 गुण अतिशयधारी, ते जिन नमि अघ टाळुरे । ऋ०  
 सि० ॥ २ ॥ जे तिहुनाण समग्ग उपन्ना चोग करम  
 क्षीण जाणी ॥ लेइ दिक्षा शिक्षा दिये जनने, ते  
 नमिये जिननाणीरे । ऋ० । सि० ॥ ३ ॥ महागोप  
 महा माहण कहिये निर्यामक सत्थवाह । उपमा  
 एहवी जेहने ठाजे, ते जिन नमियें उत्साहरे ।  
 ऋ० । सि० ॥ ४ ॥ आठ महा प्रातिहारज जसु  
 ठाजे, पांत्रीस गुणयुत वाणी । जे प्रतिबोध करै  
 जगजनने ते जिन नमियें प्राणीरे । ऋ० ॥ सि० । ५ ॥

## ॥ ढाल ॥

अरिहन्त पद ध्यातो थको दद्वहगुण पजायेरे ।  
 जेदच्छेद करी आतमा अरिहंत रूप थायेरे ॥ १ ॥  
 वीरजिनेश्वर उपदिशे, सांचलजो चित्त लाईरे । आ-  
 तमध्याने आतमा ऋद्धिमिलै सत्ती आईरे ॥ २ ॥  
 वी० ॥ ओं ह्रीं परमा० अनं० ज्ञानशक्त० जन्म०  
 मृत्युनिवा० श्रीमत्सिद्धचक्राय पंचामृतं— चंदनं  
 पुष्पं—धुपं—दीपं—अक्षतं—नैवेद्यं—फलं—वस्त्रं—वासंयजा

महे स्वाहा ॥ इति अरिहन्त पदपूजा सम्पूर्णा ॥

॥ द्वितीय सिद्धपदपूजा प्रारंभः ॥

दोहा— दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुशी  
याल । अशुभ कर्म दूरे टले, फले मनोरथ माल । १ ।

॥ काव्य—इन्द्र वज्रावृत्तम् ॥

सिद्धाण माणंद रमालयाणं, नमो नमोऽणं त च उ  
क्कयाणं ॥ समग्ग कम्म कखयकारगाणं, जम्मं जरा  
डुक्ख निवारगाणम् ॥

॥ जुजंग प्रयातवृत्तम् ॥

करी आठ कर्म द्ये पार पाम्या, जरा जन्म मर  
णादि जय जेणें वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपै  
प्रसिद्धा, यथा पार पामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥ १ ॥  
त्रिजागोने देहावगाहात्मदेशा, रक्षा ज्ञानमयजा  
तिवर्णादिलेशा, सदानंद सौख्याश्रिता ज्योतिरूपा,  
अनावाध अपुनर्नवादि स्वरूपा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उद्दालानी देशी ॥

सकल करममल द्ये करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो  
जी ॥ अव्यावाध प्रचुतामयी, आत्म संपत्ति  
चूपोजी ॥ २ ॥ उद्दालो ॥ जेह चूप आत्म सह  
ज संपत्ति, शक्ति व्यक्तिपणे करी ॥ स्वद्रव्यक्षेत्र  
स्वकालजावे, गुण अनंता आदरी ॥ स्वजाव गुण  
पर्याय परणित सिद्धि साधन पर चणी ॥ मुनिराज



मानसर हँस समवरु, नमो सिद्ध महा गुणी ॥ १ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥

श्रीपालना राशनी देखी ॥ समयपयेसंतर अण  
फरसी, चरमतिज्ञाग विशेष ॥ अवगाहन लही  
जे शिव पहाँता, सिद्ध नमो ते अशेष रे ॥ ज० ॥  
सि० ॥ ६ ॥ पूर्व प्रयोगने गति परिणामें, बंधन  
वेद असंग ॥ समय एक ऊर्ध्वगति जेहनी, ते सिद्ध  
प्रणमों रंगरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ७ ॥ निर्मल सिद्ध  
शिलानी ऊपर, जोयण एक लोकंत ॥ सादि अनंत  
तिहां स्थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संतरे ॥ ज० ॥  
सि० ॥ ८ ॥ जाणै पण न सके कही पुरगुण, प्रकृ  
ति तिम गुण जास ॥ उपमाविण नाणी जवमाहे,  
ते सिद्ध दीयो उद्वास रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ९ ॥  
ज्योतिशु ज्योति मिळी जस अनुपम, विरमी सकल  
उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध  
सहज समाधिरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥

रूपातीत स्वभाव जे, केवल दंसणनाणी रे ॥ ते  
ध्याता निज आतमा, होये सिद्धगुण खाणीरे ॥  
वी० ॥ ३ ॥ ऊँ० ह्रीं० इति सिद्ध पद पूजा ॥

॥ तृतीय आचार्यपद पूजा प्रारंभः ॥

## ॥ दोहा ॥

ह्रिव आचारज पदतणी पूजा करो विशेष ॥  
मोह तिमिर दूरे हरे, सूजे जाव अशेष ॥ १ ॥

॥ काव्य, इंद्रवज्रा वृत्तम् ॥ सुरीण्डुरी कय कुग्ग  
हाणं, नमो नमो सूरसमप्पहाणं । सद्देसणादाण  
समायराणं । अखंठ ठत्तीस गुणायराणं ॥

जुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ नमुं सूरिराजा सदातत्त्वताजा,  
जिनेंद्रागमें प्रौढ साम्राज्यजाजा ॥ पद्वर्ग वर्गित  
गुणें शोभमाना, पंचाचारने पालवे सावधाना ॥१॥  
जविप्राणीने देशना देशकाले, सदा अप्रमत्ता  
पथासूत्र आले ॥ जिके शासनाधार दिग्दंतिकदपा,  
जगत्ते चिरंजीव जोशुद्धजदपा ॥ २ ॥

## ॥ ढाल उद्घाटनी देशी ॥

आचारिज मुनिपति गुणी, गुणठत्तीशे धामो  
जी । चिदानंद रस स्वादत्ता, परजावे निकामो जी  
॥ १ ॥ उद्घाटो ॥ निकाम निर्मल शुद्ध चिदधन,  
साध्य निज निरधारथी । वरज्ञान दर्शन चरण  
वीरज, साधनाव्यापारथी ॥ जविजीव बोधक तत्त्व  
शोधक, सयलगुण संपति धरा । संवर समाधी गत  
उपाधी, दुविध तप गुण आदरा ॥ २ ॥

## ॥ ढाल ॥

श्रीपालना राशनी देशी ॥ पांच आचारजे स्रुधा

पाले, मारग जापे सांचो । ते आचारज नभिये नेह  
सुं, प्रेम करीने जांचो रे ॥ ज्ञवि० ॥ सि० ॥ ११ ॥  
वर ठत्रीश गुणें करी सोहे, युग प्रधान जग मोहे ।  
जग मोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमुं ते जोहे रे  
॥ ज्ञ० ॥ सि० ॥ १२ ॥ नित अप्रमत्त धर्म उवएसे,  
नहिं विकथा न कषाय । जेहनें ते आचारिज नभिये  
अकलुष अमल अमाय रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १३ ॥  
जे दिये सारण वारण चोयण, पश्चिचेत्यण वली  
जनने । पटधारी गढ थंन आचारिज, ते मान्या  
मुनि मनने रे ॥ ज्ञ० ॥ सि० ॥ १४ ॥ अत्यमिणें  
जिन सूरज केवल वंदीजे जगदीवो । जुवन पदारथ  
प्रगट न पटु ते, आचारज चिरजीवोरे ॥ ज्ञ० ॥  
सि० ॥ १५ ॥

## ॥ ढाव ॥

ध्याता आचारिज जला, महामंत्रशुच ध्यानीरे ॥  
पंच प्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणीरे ॥ वी०  
॥ ४ ॥ ऊँझीं० इति आचार्यपद पूजा ॥

॥ चतुर्थ उपाध्याय पद पूजा प्रारंभः ॥

## ॥ दोहा ॥

गुण अनेक जग जेहना । सुन्दर शोभित गात्र ॥  
उवजाया पद अरचिये । अनुभव रसनो पात्र ॥ १ ॥  
काव्यं, इंद्रवज्रावृत्तम् । सुतत्थ वित्थारण तप्पराणं

नमो नमो वायगकुंजराणं । गणस्त संधारण साय  
राणं, सबप्पणा वज्जिय मठराणं ॥

जुजंगप्रयातवृत्तम् । नहीं सूरि पिण सूरि गुण ने  
सुहाया, नमुं वाचका त्यक्तमदमोह माया । वलि  
छादशांगादि सूत्रार्थदाने, जिके सावधाने निरुद्धा  
जिमाने ॥ १ ॥ घरे पंचने वर्गवर्गित गुणौघा, प्रवा  
दिद्विपोष्टेदने तुल्य सिंघा । गुणी गठसंधारणे  
स्थंजपूता, उपाध्यायते वंदिये चित् प्रभूता ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उद्दालानी देशी ॥

खंतिजुआ मुत्तिजुआ, अऊव मइव जुत्ताजी ॥  
सच्चं सोय अकिंचणा, तव संयम गुण रत्ताजी ॥ १॥  
॥ उद्दालो ॥ जे रम्या ब्रह्म सुगुप्तिगुप्ता, सुमति  
सुमता शुभधरा ॥ स्याद्छादवादइ तत्वसाधक,  
आत्मपर विजंजनकरा । जवजीरुसाधन धीरशासन,  
वहन धोरी मुनिवरा ॥ सिद्धांत वायण दान समरथ,  
नमो पाठकपदधरा ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥

श्रीपालना राशनी देशी ॥ छादश अंग सकाय  
करे जे, पारग धारग तास । सूत्र अर्थ विस्तार रसिक  
ते, नमो उवजाय उद्दालसरे ॥ न० ॥ सि० ॥ १६ ॥  
अर्थ सूत्रने दान विनागे, अचारज उवजाय । जव  
त्रण्ये जे लहे शिव संपद, नमिये ते सुपसायरे ॥ न०

॥ सि० ॥ १७ ॥ मूर्ख शिष्य निपजाये जे प्रभु,  
 पाहण पद्वव आणे । ते उवजाय सकल जन  
 पूजित, सूत्र अरथ सवि जाणे रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
 ॥ १८ ॥ राज कुँवर सरिखा गणचिंतक, आचारिज  
 पद योग । जे उवजाय सदा ते नमतां, नावे जव  
 जय सोगरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १९ ॥ वावना चंदन  
 रस समवयणे, अहित ताप सविटाळे । ते उवजाय  
 नमीजे जे वढी, जिन शासन अजुवालेरे ॥ ज० ॥  
 ॥ सि० ॥ २० ॥

## ॥ ढाल ॥

तपसिजाये रत सदा, द्वादश अंगनो ध्याता रे ।  
 उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगत्राता रे ॥ वी०  
 ॥ तु० ॥ ५ ॥ जं० छीं इति उपाध्यायपद पूजा ॥

॥ पंचम साधूपद पूजा प्रारंभः ॥

## ॥ दोहा ॥

मोक्ष मार्ग साधन जणी । सावधान यथा जेह ।  
 ते मुनीवर पद वंदतां । निर्मल थाहे देह ॥ १ ॥  
 काव्यं, इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ साहूण संसाहिअ संज  
 माणं, नमो नमो सुद्ध दयादमाणं । तिगुत्ति गुत्ताण  
 समाहियाणं, मुणीण माणंद पयठियाणं ॥  
 चुजंगप्रयात वृत्तम् । करे सेवना सूरिवायग गणी  
 नी, कहूं वर्णना तेहनीशी मुणिनी । समेता सदा

पंचसुमति त्रिगुप्ता, त्रिगुप्ते नहीं काम जोगेषु  
 लिप्ता ॥ १ ॥ बली बाह्य अर्च्यंतरे ग्रंथ टाली, होय  
 मुक्तिने योग्य चारित्र पाली । शुभष्टांग योगे रमेचित्त  
 वाली, नमुं साधुने तेह निज पाप टाली ॥ २ ॥

## ॥ ढाल ॥ उद्घाटानि ॥

सकल विषय विषवारीने, निक्कामी निस्संगीजी ।  
 जवदवताप समावता, आतमसाधन रंगीजी ॥ १ ॥  
 उद्घाटो ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे, देह निर्मम  
 निर्मदा । काउसग्ग मुद्राधार आसन, ध्यान  
 अर्च्यासी सदा । तप तेज दीपे कर्म जीपे नैवठीपे  
 परजणी । मुनिराज करुणासिंधु त्रिचुवन, बंधु प्रणमुं  
 हित जणी ॥ २ ॥

## ॥ ढाल ॥ श्रीपालना राशनी देशी ॥

जिम तरुफूले जमरो वैसै, पीका तसुन उपावे ।  
 लेइ रस आतम संतोपे, तिम मुनि गोचरी जाये रे  
 ॥ ज० ॥ सि० ॥ २१ ॥ पांच इंद्रिने जे नित जीपे,  
 पटकाया प्रतिपाल । संयम सत्तर प्रकार आराधे  
 बंदू दीन दयालरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २२ ॥ अढार  
 सहस शीलंगना धोरी, अचल आचार चरित्र ।  
 मुनि महंत जयणायुत बंदी, कीजे जनम पवित्रे  
 ॥ ज० ॥ सि० ॥ २३ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्ति जे पाले,  
 बाहरविह तप सूरा ॥ एहवा मुनि नमिये जो प्रग

टे, पूरवपुण्य अंकूरारे ॥ जं० ॥ सि० ॥ ३४ ॥ सोना  
तणी परे परीक्षा दीसे, दिन दिन चढते वाने ॥  
संजमखप करता मुनि नमिये, देशकाल अनुमा  
नेरे । भ० ॥ सि० ॥ ३५ ॥

## ॥ ढाल ॥

अप्रमत्तजे नित रहे, नवि हरये नवि सोचैरे ॥  
साधु सुधाते आतमा, गुं मूढे गुं लोचैरे । वी० ॥ ६ ॥  
इतिसाधूपद पूजा समाप्ताः ।

## षष्ठी सम्यक्त्व दर्शन पद पूजा प्रारंभः ।

## ॥ दोहा ॥

जिनवर ज्ञापित सुधनय, तत्त्व तणी परतीत ।  
तेसम्यग् दर्शन सदा, आदरीये सुचरीत ॥ १ ॥  
॥ काव्यं ॥ इन्द्रवज्रावृत्तं ॥ जिणुत्त तत्ते रुद्र लक्ख  
णस्स, नमो नमो निर्म्मल दंसणस्स । मिठत्त  
नासाइ समुग्गमस्स मूलस्स सद्धम्म महाडुमस्स  
जुजंगप्रयातवृत्तम् । विपर्या सहो वासना रूपमिथ्या,  
टलै जे अनादि अबैजे कुपथ्या । जिनोक्ते हुइ सह  
जथी शुधध्यानं, कहिये दर्शनं तेह परमनिधानं । १ ।  
विना जेहथी ज्ञान मज्ञान रूपं, चरित्रं विचित्रं  
जवारण्य कूपं ॥ प्रकृति सातने उपसमें दाय तेह  
होवै, तिहां आप रूपे सदा आप जोवै ॥ २ ॥

## ॥ ढाल ॥ उद्धालानी देसी ॥

सम्यग् दर्शन गुण नमो, तत्त्वप्रतीत स्वरूपीजी ।  
जसु निरधार स्वभाव ठे, चेतन गुणजे अरूपीजी ।  
॥ १ ॥ उद्धालो ॥ जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटे, सयल  
पर ईहा टले । निज शुद्ध श्रद्धा भाव प्रगटे अनु  
जव, करुणा ऊठले । बहुमान परिणिति वस्तुतत्त्वे,  
अहव सुर कारण पणे । निज साध्यदृष्टै सर्व कर  
णी, तत्त्वता संपति गिणे ॥ २ ॥

## ॥ पूजा ढाल ॥

श्रीपालना रशनी देशी ॥ शुद्ध देव गुरुधर्म परी  
क्षा. सहहणा परिणाम । जेह पामीजे तेह नमीजे.  
सम्यक् दर्शन नाम रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २६ ॥ मल  
उपशम क्षय उपशम जेहथी, जे होय त्रिविध अ  
चंग । सम्यक् दर्शन तेह नमीजे, जिनधर्म दृढरंग  
रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २७ ॥ पांच वार उपशम लही  
जै, क्षय उपशमिय असंख ॥ एकवार क्षयकते स  
मकित, दर्शन नमियें असंख रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
॥ २८ ॥ जेविण नाण प्रमाण न होवै, चारित्रतरु  
नवि फलियो । सुखनिर्वाणन जे विण लहिये, सम  
कित दर्शन बलियो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २९ ॥ समस्त  
वृक्षे जे अलंकरी ज्ञान चारित्रनुमूल । समकित द  
र्शन ते नितप्रणमं, शिवपंथनुं अनुकूलरे । ज० ॥ सि० ॥ ३०



## ॥ ढाल ॥

समसंवेगादिक गुणा, क्षय उपशम जे आवेरो दर्शन तेहिज आतमा, शुंहोय नाम धरावे रे ॥ ॥ वीर ॥ ७ ॥ इति सम्यक् दर्शनपदपूजा ॥

## सप्तम सम्यक् ज्ञान पद पूजा

## ॥ दोहा ॥

सप्तमपद श्रीज्ञाननो । सिद्ध चक्र तप मांहि ।  
आराधीजे शुभमने । दिन दिन अधिक उगाह ॥१॥  
॥काव्यं॥ इद्रवज्रावृत्तम् । अन्नाणसंमोह तमोहरस्स ।  
नमो नमो नाण दिवायरस्स । पंचप्पयारस्सुवगा  
रगस्स । सत्ताण सव्वत्थ पयासगस्स ॥

॥ जुजंगप्रयातवृत्तम् । होय जेहथी ज्ञान शुद्ध प्र  
वोधे, यथा वर्ण नासे त्रिचित्रा विवोधे । तेणें जाणि  
येवस्तु षट्द्रव्यज्ञावा, न होवेवित्ता ( वाद ) नि  
जेहास्वज्ञावा ॥ १ ॥ होय पंचमत्यादि सुज्ञान जेदै,  
गुरूपासती योग्यता ते न वेदै । वली ज्ञय हेया ऊ  
पादेय रूपै, लहे चित्तमां जेम ध्याने प्रदिपै ॥ २ ॥

## ॥ ढाल ॥ उद्घाटनी ॥ देशी ॥

ज्ञव्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपर प्रकाशक जावैजी ।  
परयाय धर्म अनंतता जेदाजेद स्वज्ञावेजी ॥ न०  
॥ १ ॥ उद्घालो । जेमोख्य परणति सकल ज्ञायक,

बोध वास विलासता । मति आदि पंच प्रकार नि  
र्मल, सिद्ध साधन लंठता । स्याद्वाद संगी तत्त्व  
रंगी, प्रथम भेद अचेदता । सविकल्पने अवि  
कल्प वस्तु, सकल संशय ठेदता ॥ २ ॥

## ॥ पूजा ॥ ढाल ॥

श्रीपालना रासनी देशो । जह्म अजह्मन जेविण  
लहिये, पेय अपेय विचार । कृत्य अकृत्य न जेविण  
लहिये, ज्ञान ते सकल आधारे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
३१ ॥ प्रथम ज्ञान नें पीठे अहिंसा, श्री सिद्धांते  
जाख्युं । ज्ञानने वंदो ज्ञान मनिंदो, ज्ञानीये शिव  
सुख चाख्युरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३२ ॥ सकल क्रिया  
नुं मूल जे अज्ञा, तेहनुं मूल जे कहिये । तेह ज्ञान  
नित नित वंदीजे ते विण कहो किम रहिये रे ॥  
ज० ॥ सि० ॥ ३३ ॥ पांच ज्ञान मांहि जेह सदा  
गम, स्वपर प्रकाशक तेह । दीपक परें त्रिचुवन  
उपकारी, वली जिम रवि शशि मेहरे ॥ ज० ॥  
सि० ॥ ३४ ॥ लोक ऊरध अध तिर्यग् ज्योतिष,  
वैमानिकनें सिद्धि । लोक अलोक प्रगट सवीजेह  
धी, ते ज्ञान मुज शुद्धि रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३५ ॥

## ॥ ढाल ॥

ज्ञानावर्णी जे कर्म ठे, ह्य उपशम तसु जायै  
रे । तो होय एहिज आत्मा, ज्ञान अयोधतां जाय

रे । वी० ॥ ७ ॥ जँझीं इति सम्यक् ज्ञान पद पूजा ।

॥ अष्टम चारित्र पद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

अष्टम पद चारित्रनो । पूजो धरी उमेद ।

पूजत अनुभव रसमिले, पातिक होय उठेद ॥ १ ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ आराहिया खंकीअस  
कीअस्स, नमो नमो संजम वीरियस्स ॥ सज्जा

वणा संग विवहियस्स निवाण दाणाइ समुज्जयस्स

॥ जुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ वली ज्ञानफल ते धरिये सुरं

गे, निरासंसताद्वाररोधप्रसंगे । जवांरोध संता

रणे यान तुढ्यं । धरुं तेह चारित्र अप्राप्त मूढ्यं ॥

१ ॥ होय जास महिमा थकी रंक राजा, वली छाद

शांगी भणी होय ताजा । वली पापरूपोपि निः पाप

थाये, थइ सिद्ध ते कर्मने पार जाये ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥ उद्धालानी देशी ॥

चारित्रिगुण वली वली नमो, तत्त्वरमण जसमूलो

जी । पर रमणीय पणुं टले, सकल सिद्ध अनुकूलो

जी ॥ चा० ॥ १ ॥ उद्धालो । प्रतिकूल आश्रव

त्याग संयम, तत्त्वथिरता दममइ । शुचि परमखंती

मुनि दशमेपद, पंचसंवर उपचइ । सामायिकादिक

जेद धर्म, यथा ख्याते पूर्णता । अकषाय अकलुष

अमल उज्जल, काम कश्मल चूर्णता ॥ २ ॥

## ॥ ढाल श्रीपालनारासनी देशी ॥

देशविरतिनें सर्व विरतिजे । ग्रहीयतिनें अत्रि  
 राम । ते चारित्र जगत जयवंतो । कीजै तास प्रणा  
 म रे । ज० ॥ सि० ॥ १ ॥ तृणपरै जेपदखंरु सुख  
 ठंकी । चक्रवर्ति पिण वरियो । ते चारित्र अखय  
 सुख कारण । ते में मन मांहि धरियोरे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
 २ ॥ हुआ रंकपणे जे आदरि । पूजित इंद्र  
 नरिंद । अशरण सरण चरण ते बंदू । वरिठ ज्ञान  
 आनंदरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३ ॥ वारमास परजाइं जेहनें ।  
 अनुत्तर सुख अतिक्रमिइं । शुक्ल सुक्ल अत्रिजा  
 त्यते ऊपरि । ते चारित्रनें नमीइं रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४ ॥  
 चयते आठ करमनो संचय । रिक्त करै जे तेह ।  
 चारित्र नाम निरुक्तै जाख्युं । तेवंडुं गुण गेहरे  
 ॥ ज० ॥ सि० ॥ ५ ॥

## ॥ ढाल ॥

जाणि चारित्र ते आतमा । निज स्वभाव मांहि  
 रमतो रे । लेश्या शुद्ध अलंकरथो । मोहवनें नवि  
 चमतो रे ॥ वी० तुमे० ॥ ६ ॥ ऊंझीं प० ॥ इति  
 आठमी श्रीचारित्रपद पूजा ॥

॥ नवमी तप पद पूजा प्रारंभः ॥

## ॥ दोहा ॥

करमकाष्ठ प्रतिजालवां । परतिख अगनि समान ।

ते तप पद पूजो सदा । निरमल धरिय ध्यान ॥ १॥  
 काव्यं ॥ इन्द्रवज्रावृत्तम् । कम्महुमोन्मूलन कुंजरस्स ।  
 नमोशतिव तवोयरस्स । अणो ग लद्धीण निबंधणस्सा ।  
 दुस्सज्ज अत्थाणय साहणस्स ॥ ७ ॥ इय नवपय  
 सिद्धिं लद्धिं विज्जा समिद्धं । पयस्सिय सरवग्गं  
 झींतिरेहा समग्गं । दिसिवय सुरसारं खोणि पीढा  
 वयारं । तिजय विजयचक्रं सिद्ध चक्रं नमामि ॥ १॥  
 त्रिकालक पणें कम्मकषाय टाले । निकाचित पणें  
 बांधिया तेहवालै । कह्यो तेह तप बाह्य अच्यंतर  
 दुजेदै । दामा युक्ति निर्हेत दुर्ध्यान छेदै ॥ ७ ॥  
 होय जास महिमाथकी लब्ध सिद्धि, अवांठकपणे  
 कर्म आवरण शुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंदहे  
 ते होइ सिद्धि । सीमंतनी निज संकेत इम नव  
 पद ध्यावे । परम आनंद पावे, नव जव शिव जावे,  
 देव नरत्तवज पावे ॥ ज्ञान विमल गुण गावे सिद्धचक्र  
 प्रजावे, सब दुरति समावे, विश्व जयकारपावे ॥ ४ ॥

## ॥ ढाल ॥ उद्धालानि देखी ॥

इहारोधन तप नमो, बाह्य अच्यंतर जेदे जी ॥  
 आत्म सत्ता एकता, पर परणित उहेदे जी ॥ १ ॥  
 उद्धालो ॥ उहेद कर्म अनादी संतति जे सिद्धपणो  
 वरे ॥ सुज्ञयोगसंग आहार टाली जाव अक्रियता  
 करे ॥ अंतर मुहूरत तत्त्व साधे, सर्व संवरता करी ॥  
 निज आत्मसत्ता प्रगट जावें, करो तप गुण आदरी ॥ १ ॥

## ॥ ढाल ॥

इम नवपद गुणमंकलं, चउनिद्वेष प्रमाणे जी ॥  
 सात नये जे आदरे सम्यक्ज्ञाने जाणे जी ॥ उद्धा  
 लो ॥ निर्धार सेती गुणे गुणणो, करइ जे बहुमान  
 ए ॥ जमु करण ईहा तत्व रमणे, थाये निर्मलध्या  
 न ए ॥ इम शुद्धसत्ता भलो चेतन, सकल सिद्धि अ  
 नुसरे ॥ अक्षय अनंत महंत चिदवन, परम आनं  
 दतावरे ॥ कलश ॥ इम सयलसुखकर गुणपुरंदर,  
 सिद्धचक्र पदावली ॥ सवि लद्धि विज्ञा सिद्धिमं  
 दिर, जविक पूजो मन रली ॥ उवजाय वर श्रीरा  
 जसागर, ज्ञान धर्म सुराजता ॥ गुरु दीपचंद सु  
 चरण सेवक, देवचंद सुशो नता ॥ १ ॥

## ॥ पूजा ॥ ढाल ॥

श्रीपालना रासनी देशी ॥ जाणंता त्रिहूं ज्ञाने  
 संयुत, ते जवमुगति जिणंद ॥ जेह आदरे कर्म ख  
 पेवा, ते तप सुरतरु कंदरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४१ ॥  
 कर्म निकाचित पणि दाय जाई, क्षमा सहित जे  
 करतां ॥ ते तप नमिये तेह दीपावे, जिन शा-  
 सन उजमंतारे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४२ ॥ आमोसही  
 पमुहा बहु लद्धि, होवे जास प्रजावे ॥ अष्टमहासि  
 द्धि नव निधि प्रगटे, नमिये ते तप जावे रे ॥ ज०  
 ॥ सि० ॥ ४३ ॥ फल शिवसुख महोदुं सुर नरवर,

संपति जेहनं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरीपो वंदूं, श  
ममकरंद अमूल रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४४ सर्व मंगल मां  
हिपहिलो मंगल, वरणवियो जे ग्रंथ ॥ ते तप पद त्रि  
करण नित नमीये वर सहाय सिवपंथ रे ॥ ज०  
सि० ॥ ४५ ॥ इम नव पद शुणतो तिहां लीनो,  
हुठ तन्मय श्रीपाल ॥ सुजस विलास ठे चोथे खंमे,  
एह इग्यारमी ढाल रे ॥ ज० ॥ सि० ४६ ॥

## ॥ ढाल ॥

इठारोधन संवरी, परणित समता योगेरे ॥ तप  
ते एहिज आतमा वरते निजगुण जोगे रे ॥ वी० ॥  
॥ १० आगम नो आगम तणो, भाव ते जाणो सां  
चोरे ॥ आतम भावें थिर हुवो, पर चावे मत राचो  
रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी घटमांहि  
रुद्धिदाखी रे ॥ तिम नवपद रुद्धि जाण जो, आ  
तमराम ठे साखी रे ॥ वि० ॥ १२ ॥ योग असंख्य ठे जिन  
कह्या, नवपद मुख्यते जाणो रे ॥ एह तणे अविदं  
बने, आतमध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ ढाल  
बारमी एहवी, चोथे खंमे पूरी रे ॥ वाणी वाचक  
जस तणी, कोइनय रही अधूरीरे ॥ वी० ॥ १४ ॥  
जं ऱ्हीं परमात्मने० अनं० ज्ञान० जन्मजरा० श्री  
मत्सिद्धचक्राय वासं-पंचामृतं-चंदनं-पुष्पं-धूपं-  
दीपं-अक्षतं-नैवेद्यं-फलं-वस्त्रं यजामहे- ॥ इति  
तप पद पूजा ॥

इति श्री देवचंदजी यशविजयजी महोपाध्याय  
कृत सिद्धचक्र महात्म नवपदजीकी धनी पूजा सं०

अथ नवपदपूजादिक सर्व पूजाओं में जो सामग्री  
अवश्य चाहिये सो सबके याददास्ती खातर केई  
चीजों के नाम लिखते हैं ( पंचामृत ) दूध दही  
घृत मिश्री शुद्धजल केसर सुगंध चंदन कपूर कस्तू  
री अंबर रोली मोली छूटाफूल फूलोंकी माला  
फूलोंका चंद्रवा धूप चावल प्रमुख नव जातके धान  
नव प्रकार के नैवेद्य नव प्रकार के फल ( ए ) प्रका  
रके पक्ववस्तु मिश्री पतासा उंला बदाम सुपारी  
प्रमुख अंगलुहणा खातर सपेद वस्त्र पहरावणी  
खातर उत्तम रेशमी प्रमुख वस्त्र वासद्धेप गुलाब  
जल अन्तर इत्यादिक और नव नालीके कलस  
( ए ) रकेवी परात सतला आरती मंगलदीप जग  
वान के अंगी समोसरण इत्यादिक सबचीज पह  
ली ठीक कर के रखे इससे पूजा में विघ्न न होय  
इहां संक्षेप विधि कही विसेप विधि गुरुके मुखसे  
जाण लेणी ॥ इति ॥

**अथ दादा गुरु महाराज की पूजा**

अथ पहली थापना स्थापन करके आवाहन का  
श्लोक पढ़े ॥ काव्य ॥ सकल गुण गरिष्ठान् सत्तपो  
चिर्वरिष्ठान् शम दम यमपुष्टांश्चारुचारित्रनिष्ठान् ।  
निखिल जगति पीठे दर्शितात्मप्रचावान् मुनिपकु



शल सूरिन्स्त्रापयाम्यत्र पीठे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री  
 जिनदत्त श्री जिन कुशल श्री जिन चंद्रसूरिगुरौ  
 अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन  
 दत्त सूरिगुरौ अत्रतिष्ठ २ ठः ठः ठः स्वाहा इति  
 प्रतिष्ठापनं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्तसूरिगुरौअत्र  
 ममसंनिहितोऽत्र वषट् इति संनिधीकरणं ॥ अथ  
 जलका कलश लेके स्नात्रीया सुच होके खजा रहे ॥  
 प्रथम जल पूजा ॥ दोहा ॥ ईश्वर जग चिंतामणी  
 कर परमेष्ठिध्यान । गणधर पद गुण वर्णना पूजन  
 करो सुजाण ॥ सौ धर्मा मुनिपति प्रगटवीरजिने  
 श्वर पाट । मिथ्या मत तम हरणकं जव्यदिखावण  
 वाट ॥३॥ सुरिथतसुप्रतिवज्ज गुरुसूरि मंत्रको जाप ।  
 कोटिकीयो जवध्यानधर कोटिकगठ सुथाप ॥३॥  
 दश पूर्व्वीं श्रुतकेवली भये वज्रधरस्वाम । तादिन  
 तें गुरु गठ को वज्रशाख जयो नाम ॥ ४ ॥ चंद्र  
 सूरि जये चंद्रसम अतहि बुद्धि निधान । चंद्रकुली  
 सब जगत में पसन्यो बहु विज्ञान ॥ ५ ॥ वर्द्धमान  
 के पाट पद सूरिजिनेश्वर चाश, चैत्य वाशि कूं  
 जीत कर सुविहित पद प्रकाश ॥ ६ ॥ अणहि  
 लपुर पाटणसजा लोक मिले तिहां लक्ष । खरतर  
 विरुद सुधानिधि दुर्लभ राजसमक्ष ॥ ७ ॥ अजय  
 देवसूरि जये नव अंगटीका कार । थंजण पारस  
 प्रगट कर कुष्ठ मिटा वनहार ॥ ८ ॥ श्री जिनदत्त

सूरिगुरु रचनाशास्त्र अनेक । प्रतिबोधे श्रावकवहुत  
 ताके पट्ट विशेष ॥ ए ॥ हुंवरु श्रावग वाघमी अठारे  
 हज्जार । जैन दया धर्मी किये वरते जैजैकार ॥१०॥  
 दादा नाम विख्यात जस सुर नर सेवग जास । दत्त  
 सूरि गुरु पूजतां आनंद हर्ष उद्वास ॥ ११ ॥ दिह्वी  
 में पतसाहने हुकम उठाया शीश । मणिधारी जिन  
 चंद गुरु पूजो विसवावीस ॥ १२ ॥ ताके पट्ट परंपरा  
 श्री जिन कुशल सूरिंद । अकवर कूं परचा दीआ  
 दादा श्री जिन चंद ॥ १३ ॥ ऐसे दादा चार्यकूं  
 पूजो चित्त लगाय । जल चंदन कुसुंमादि कर ध्वज  
 सौगंध चढाय ॥ १४ ॥ चाल ॥ दादा चिरंजीवो  
 पदेशी ॥ गुरुराज तणी पूजन कर नविसुखकर मि  
 लसी लह्वी घणी । ए आँकणी । गुरुदत्त सूरिंद जग  
 सुखकारी, गुरु सेवगने सानिधकारी, गुरुचरण क  
 मलनी बलिहारी, ॥ गुण ॥ १ ॥ संवत इग्यारे  
 वार शशि, वत्तीसे जनम्यां शुभदिवसी, श्रावग  
 कुल कुंवरुने हुलसी ॥ गुण ॥ २ ॥ जसुवाठगसापि  
 तुनाम जणे, वाहरुदे माता हर्ष घणे, इकतालीसे  
 दीक्षा पत्रणे ॥ गुण ॥ ३ ॥ गुणं हत्तरे बल्लन पाट  
 धरी, गुरुभाय बीजनो जाप करी, गुरु जगमे प्रग  
 द्या तरणतरी ॥ गुण ॥ ४ ॥ मणि धारी जिन चंद  
 उपगारी, जिनदत्त सूरिंदके परधारी, जये दादा  
 दूजासुख कारी ॥ गुण ॥ ५ ॥ राशख पितु देव्हण

दे माता, श्रीमाल गोत्र बोधनशाता, दिव्ही पत  
 शाह सुगुण गाता । गु० ॥ ६ ॥ जसु चोथे पाट उ  
 द्योत करि, जिन कुशल सुरिंद अति हर्ष नरी, तेरे  
 से तीसे जनमघरी ॥ गु० ॥ ७ ॥ जसु जिद्धा जन  
 क जगत्र जीयो, वर जैतसीरी शुचस्वपन लीयो, गुरु  
 ठाजेरु गोत्र उद्धार कीयो ॥ गु० ॥ ८ ॥ धनसेता  
 लीसे दीक्षा धरी, जिन चंदसूरीश्वर पाटवरी, गुण  
 हत्तरे सूरि मंत्र जाप करी ॥ गु० ॥ ९ ॥ सेवामे बाव  
 न वीर खरा, जोगणिया चोसठ हुकम धरा, गुरुज  
 गमें केइ उपगार करा ॥ गु० ॥ १० ॥ माणक सूरी  
 श्वर पद ठाजे, जिन चंदसूरि जगमे गाजे, चये दा  
 दा चोथा सुखकाजे । गु० ॥ ११ ॥ जिन चांद उगा  
 यो उजियालो, अम्मावस की पूनमवालो, सब श्राव  
 कमिल पूजन चालो ॥ गु० ॥ १२ ॥ जिन अकबर  
 कुं परचादीना, काजीकी टोपी वश कीना, बकरीका  
 जेद कह्या तीना ॥ गु० ॥ १३ ॥ गंधोदक सुरजि  
 सुकलश नरी, प्रहालन सदगुरु चरण परी, या पूजन  
 कवि रुद्रिसार करी ॥ गु० ॥ १४ ॥

## ॥ श्लोक ॥

सुरनदी जल निर्मल धारकौ, प्रबल दुष्कृत दा  
 घनिवारकौ ॥ सकल मंगल वंठित दायकौ, कुशल  
 सूरि गुरो श्ररणौ यजे ॥ १ ॥ ॐ न्हीं श्रीं परमपुरु  
 षाय परम गुरुदेवाय नमोवते श्री जिनशासनोद्दी

पकाय श्री जिनदत्तसूरीश्वराय मणिमंजित भा  
 सस्थल श्रीजिनचंद्रसूरीश्वराय श्रीजिन कुशल  
 सूरीश्वराय अकच्चरं असुर त्राण प्रतिबोधकाय श्री  
 जिनचन्द्रसूरीश्वराय जलं विर्वपामिस्वाहा ॥ १ ॥

## अथ लुजी केशर चंदन पूजा ।

दोहा-॥ केशर चंदन मृगमदा, कर घनसार मि-  
 क्षाप । परचा जिनदत्त सूरिका, पूज्यां दूटे पाप ॥१॥  
 चाल चीन वाजेकी ॥ दीनके दयाल राजसार २ तं॥  
 ॥ आंकणी ॥ आये जरुअछ नग्र धाम धूम २ धुं वा  
 जते निशाण ठोरहर्ष रंग हूं-हण्दी०॥१॥ दो०॥ मुस-  
 लमान मुगलपूत फोजमो जमूं फोत मोत होगया  
 हायकारसुं ॥ हाण्दी० ॥ २ ॥ दोहा ॥ सघन विघन  
 देख आप हुकम दीन यूं लाओ मेरे पास आस जी-  
 वदान दूं ॥ जी० दी० ॥३॥ दोहा ॥ मृतक पूतमं  
 त्रसे उगाय दीनतुं देखके अचंजरंग दासखासकुं  
 ॥ दा० दी० ॥४॥ दोहा ॥ करतसेव जाव पूर तूरकराज  
 जुं ठोरुके अजद खाण हाजरी जरुं ॥ हाण्दी० ॥५॥  
 ॥ दोहा ॥ बीज खीजके पनी प्रतिकमणके मुं हा थ  
 से उगाय पात्र ढांक दीन वूं ॥ ढां० दी० ॥६॥ दोहा ।  
 दामनी अमोल बोल सिद्धराज तूं देउवरदान ठोरु  
 बंधकीन क्यूं ॥ वं० दी० ॥७॥ दोहा ॥ दत्त नाम  
 जपत जाप करत नांहूं चूं फेरमें पकृंगी नाह ठोरु

दीनफूं ॥ ठो० दी० ॥ ७ ॥ दोहा ॥ करोगे निहाल  
 आप पात्र पलकनूं रामरुजिसार दास चरण बंध  
 लूं ॥ च० दी० ॥ ए ॥

## ॥ श्लोक ॥

मलय चंदन केशर वारिणा, निखिल जाड्य रुजा  
 तपहारिणा । सकल मंगल वांछित दायकं कुशल  
 सूरि गुरोश्चरणौयजे ॥ ॐ न्हीं श्रीं श्रीजिनदत्त सूरि  
 श्वराय केशर चंदनं निर्घपाभिते स्वाहा ॥ १ ॥ दोहा ॥  
 चंपा चेमली मालती मरुवा अरु मचकुंद । जोचा  
 ठेगुरुचरण पर नितघरहोय आनंद ॥ १ ॥ नींद तो  
 गई वादिलामारी । एदेशी ॥ रागमारु ॥ गुरु पर  
 तिख सुर तरु रूप सुगुरु शम दूजो तो नहीं । दूजो  
 तो नहींरे सुमति जन दूजो तो नहीं गुरु परतिख  
 सुर तरु रूप सुगुरुने पूजो तो सही ॥ ए आंकणी ॥  
 चितोरु नगरी वज्रथंभमें विद्या पोथीरहीरे ॥ सु०  
 दि० ॥ हेजी मंत्रजंत्र विद्यासे पूरी गुरु निज हाथ  
 गृही । गुरु० । गुरुवर० ॥ १ ॥ पुर उजेणी महाकाल  
 के मंदिर थंभ कहीरे ॥ सुम० । हेजी शिद्धसेन दिन  
 करकी पोथी विद्या सरन लहीरे ॥ सु० ॥ वि० ॥  
 गुरुवर० ॥ २ ॥ उजेणी व्याख्यान बीचमे श्राविका  
 रूप गृहीरे । सु० । श्रा० ॥ हेजी जोगणीयां छलणे  
 कुं आई सत्रकुं खील दर्ई । सु० । गु० ॥ ३ ॥ दीन  
 होय जोगणीयां चोसठ गुरुकी दाश जईरे । सु० । गु० ।

गुण । हेजी सातदीयां वरदानं हरख से पसरथा  
 सुजस मही । प० । गु० ॥ ४ ॥ पुष्पमाल गुरु गुण  
 की गूंथी चाको चित्त चहीरे ॥ सु० । चा० । हेजी  
 कहे रामऋद्धिशार सुजसकी वूंटी आप दर्ई । वूं० ।  
 गू० ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ कमल चंपक केतकी पुष्पकै  
 परिमलाहत् पद्मपदवृंदकैः ॥ सकल० ॥ ॐ ज्हीं  
 श्रीं श्री जिनदत्त० पुष्पं निर्वपामिते स्वाहा ॥ ३ ॥

दोहा ॥ धूप पूज कर सुगुरुकी, पसरे परमल पूर ।  
 जस सुगंध जगमें वधे, चढे सवाया नूर ॥ राग सो  
 रठा ॥ कुवजाने जादूकारा । ए चाल । अंविक्का विरु  
 द बखाणे गुरुतेरो । अं० । तुम युग प्रधान नही  
 ठाने ॥ गु० । ए आंकणी । गढ गिरिनारपें अंवरु  
 श्रावक एसोनियम चित्तठाणे । युग प्रधान इस जुग  
 में कोई देखूं जन्म प्रमाणे । गु० अं० ॥ १ ॥ कर जप  
 वाश तीन दिन वीते प्रगटी अंवाझाने ॥ गु० । प्र  
 गट होय करमे लिख दीना सुवरन अद्दर दाने ।  
 गु० । अं० ॥ २ ॥ या गुण संयुत अद्दर वांचे ताकूं  
 युग वरजाने । गु० । अंवरु मुलक २ से फिरतां सूरी  
 शकल पतवाने । गु० अं० ॥ ३ ॥ आया पास तुमारे  
 सदगुरु कर पसार दिखलाने ॥ गु० । वासक्षेप  
 उनऊपर माला चेला वांच सुणाणे । गु० अं० । ४ ।  
 सर्व देवहे दास जिनो के मरुधर कल्प प्रमाणे ।  
 गु० । युग प्रधान जिनदत्त सूरीश्वर अंवरु शीस

जुझाने । गु० । अं० । ५ । उद्योतन सुरिने निज ह  
 थ चोरासी गह ठाने । गु० । सोसव तुमरी सेवा  
 सारे चोरासी गहमाने ॥ गु० । अं० ॥ ६ ॥ जो मि  
 थ्यात्वी तुमकुं न पूजे सो नही तत्व पिठाने । गु० । जड्र  
 बाहु स्वामी तुम कीर्तन कीनी ग्रंथ प्रमाणे गु० अं० । ७ ।  
 युग प्रधान परि कीए गंफिका गण धर पद वृत्ति  
 म्याने । कहे रामरुद्धिशार गुरु कुं पूजा धूप कराने  
 गु० अं० । ८ ॥ श्लोक ॥ अग्र चंदन धूप दशांगजैः  
 प्रसरिताखिल दिहु सुधूम्रकैः । शकल मं० । ९ ॥ अं०  
 ॐ न्हीं श्रीं परं धूपं निर्वपामिते स्वाहाः ४ ।

दोहा। दीप पूज कर सुगण नर नित शमंगल होता उ  
 जियालो जगमें जुगत रहे अखंकत जोत । १ । चाल ख्या  
 लकी । पूजन कीज्योजी नर नारी गुरु महाराज  
 का ॥ हो पू० । सिंधु देशमें पंच नदी पर साधे पांचु  
 धीर । लोइ ऊपर पुरप निराये एसे गुरु सधीर । पू०  
 १ ॥ प्रगटहोयके पांच धीरने सात दीया वरदान ।  
 सिंधु देश मे खरतर श्रावग होवेगा धनवान । पू०  
 २ । सिंधु देश मुलतान नग्रमे बरु महोठव देख ।  
 अंबरु और गह का श्रावग गुरु से कीना छेष । पू०  
 ३ ॥ अणहिलपुरपत्तनमे आवो तोमे जाणुं सच्चा ।  
 बरु महोठव आवेंगे तूं निर्धन होगा कच्चापू० ४ ॥  
 पत्तन बीच पधारे दादा सनमुख निर्धन आया ॥  
 गुरु बतलाया क्युरे अंबरु अहंकार फल पाया । पू०

॥५॥ मनमें कपट कीया अंबरने खरतर महिमा धारी । जहरदीया उन अशनपांनमें गुरुविध जाणी सारी । पू० ॥ ६ ॥ जणशाली मुखवर श्रावग से निर्विष मुझी मंगाई । जहर उतारा तव लोकों में अंबरु निंद्या पाई । पू० । ७ । सरके वितर हुवा वो अंबरु रजोहरण हर लीना । जणशाली वितर वचनोसें गोत्र उतारा कीना । पू० । ८ । सज्जहोय गुरु औघाळे के गोत्र बचाया सारा । रुद्धिशार महिमा सदगुरु की दीपकका उजयारा । पू० ए । श्लोक । अति सुदिप्तमयै खलु दीपकैः विमल कंचन ज्ञानसंस्थितैः । सकलण ऊँर्हीं परं दीपानिर्घपामिते स्वाहाः ॥ ५ ॥ दोहा ॥ अकृतपूजा गुरुतणी करो महाशयरंग । कृती न होये अंगमे जीते रण मे जंग । १ । राग आसावरी ॥ अबधू सो जोगी गुरु मेरा । एचाल रतन अमोलख पायो सु गुरु शम रतन अमोलख पायो गुरु शंकट सबही मिटायो । सु० ए आंकणी विक्रमपुर नगरी लोकनकूं हेजा रोग संतायो । व होतउपाय कीया शांतिकका जरा फरक नही आयो सु० र० । १ । जोगी जंगम ब्रह्म संन्यासी देवी देव मनायो । फरक नही किनही ने कीना हाहा कार मचायो सु० र० । १ । रतन चिंतामणि सरियो साहिव विक्रमपुर मे आयो । जैनसंघको कण्ट दूरकर जैकार चरतायो सु० र० । १ । महिमा सुण



माहेश्वर ब्राह्मण सबही शीश नमायो । जिवत दांन  
 करो महाराजा गुरु तव यूं फुरमायो । सु० २०।४। जो  
 तुम समकित वृतकूं धारो अबही करदूं उपायो ।  
 तहत वचन कर रोग सिटायो आनंद हर्ष वधायो ।  
 सु० २० ५ । जो कोई श्रावण वृत नही धारयो पुत्री  
 पुत्र चमायो । साधु पांच से दीक्षित कीना साधवी  
 यां ससुदांयो सु० २०। ६ । मंत्र कला गुरु अतिशय  
 धारी एसो धर्म दिपायो । ऋत्तिसार पर किरपा की  
 नी सांचो इलम बतलायो सु० २० । ७। श्लोक । सरल  
 तएकुलकैरतिनेर्मलै प्रवर मौक्तिक पुंजबहु  
 ज्वलैः । शकलणं ऊँ ह्रीं श्रीं प० अक्षतं निर्वापामिते  
 स्वाहाः । ६। दोहा ॥ नैवद्य पूजा सातमी करो जविक  
 चित चाव । गुरु गण अगणित कुण गिणे गुरु जव  
 तारण नाव । १। राग कल्याण । तेरी पूजा वणी हे रसमे  
 ए चाला हो गुरु किया असुर कुं वश मे । ए आंकणी  
 वरुनगरी मे आप पधारे सांभेला धसमसमे  
 ब्राह्मण लोक बके अन्निमानी मिलकर आया सुसमे  
 हो गु०।१ । सहिमा देख सक्या नही गुरुकी जरे  
 मिथ्यात्वी गुसमे । मृतक गउ जिन मंदिर आगे  
 रखदी सनमुख चसमे । हो गु० २ । श्रावण देख भये  
 आकुलता कहे गुरु से कसमे । चिंता दूर करी हे संघ  
 की गउ उठ चाली रुसमे । हो गुरु० । ६। मरी गउकूं  
 जीति कीनी लोक रह्या सब हसमें । जाके गाय पमी

सूडालय संघज्ञया सवखसमे । हो गुण ४ । ब्राह्मण  
पांव एड्या सव गुरु के देख तमासा इसमे । हुकम  
उठावेंगे शिर ऊपर तुम शंतति की दिशमे । हो  
गुण ५ । नमस्कार हे चमत्कार कूं कीनी पूजा रसमे ।  
कहे रामकृष्णिसार गुरु की आनंद मंगल जसमे  
हो गुण ६ । श्लोक । बहु विधेश्वरुर्जिर्वटकैर्यकैः प्रचुर  
सर्पिपिपक्कसुखज्जकैः । शकल ० । ॐ ह्रीं श्रीं ५० नैवे  
द्यंनिर्विपाभिते स्वाहाः ॥ ७ ॥ दोहा ॥ फल पूजा  
से फल मिले प्रगटे नवे निधान । चिंदिश कीरत  
विस्तरे पूजन करो सुजान ॥१॥ रथ चढ जदुनंदन  
आवत हे । ए चाल । चालो संघ सव पूजनकूं गुरुश  
मरयां सनमुख आवत हेरे ॥ चा० ॥ ५ ॥ ए आंक  
णी । आनंदपुर पट्टन को राजा गुरु शोभा सुण पा  
वत हेरे ॥ चा० ॥ जेज्या निज परधान बुलाणे नृप  
अरदास सुणावत हेरे ॥ चा० ॥ लाज जाण गुरु  
नगर पधारे नृपत आय वधावत हेरे ॥ चा० ॥ राज  
कुमर को कुष्ट मिटायो अचरज तुरत दिखावत  
हेरे ॥ चा० ॥ २ ॥ दशहजार कुटंब संग नृप कूं  
श्रावग धर्म धरावत हेरे ॥ चा० ॥ दया मूल आझा  
जिनवर की वारे व्रत उचरावत हेरे ॥ चा० ॥ एसे  
च्यार राज समकित धर खरतर संघ वणावत हेरे ॥  
चा० ॥ ४ ॥ कुष्ट जलंधर दौण जगंदर केइयक  
लोक जीवावत हेरे ॥ चा० ॥ ब्राह्मन द्वात्री श्रु

माहेश्वर ओसवंस पसरावत हेरे ॥ चा० ॥ ५ ॥  
 तीस हजार एक लख श्रावग महिमा अधिक रचा  
 वत हेरे ॥ चा० ॥ कहत रामरुद्रिसार गुरुकूं फल  
 पूजा फल पावत हेरे ॥ चा० ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ फनस  
 मोचसदाफल कर्कटै सुसुखदै किलश्रीफलचिर्नटै ॥  
 शकल० ऊँ न्हीं ॥ प० ॥ फलं निर्विषामिते स्वाहाः  
 ॥ दोहा ॥ वस्त्र अतर गुरु पूजना चोवा चंदन चंपेदा  
 दुस्सन सब सज्जन हुवे कर सुरंगा खेल ॥ १ ॥  
 मनमो किमहीन वाजे हो कुंथुजिन । ए चाल । लख  
 मी लीला पावेरे सुंदर लखभी लीला पावे जे गुरु  
 वस्त्र चढावेरे ॥ सुं० ॥ सुजन अतर महकावेरे । सुं० ।  
 डुरजन शीश नमावेरे ॥ सुं० ॥ ए अंकणी । दरिया  
 बीच जीहाज श्रावग की कूवण खतरे आवे । सांचे  
 मन समरे सद गुरुकूं डुख की टेंर सुणावेरे ॥ सुं० ॥  
 ॥ १ ॥ वाचंताव्याख्यानसूरी श्वर पंथी रूपे थावे । जाय  
 समंद मे जीहाज तिराई फिर पीठा जब आवेरे । सुं० ॥  
 ॥ २ ॥ पूढे संघ अचरज मे चरीया गुरु सब वात  
 सुणावेरे ॥ सुं० ॥ एसें दादा दत्त कुशल गुरु परचा  
 प्रगट दिखावेरे ॥ सुं० ॥ ३ ॥ बोथर गूजरमल श्राव  
 ग की दादा कुशल तिरावेरे ॥ सुं० ॥ सुखसूरि गुरु  
 शमय सुंदर की जहाज अलोप दिखावेरे ॥ सुं० ॥  
 ॥ ४ ॥ ल० ॥ वारेसें इग्यारे दत्तसूरि अजमेर अण  
 सणवावे । उपज्यासौधर्मादेवलोके सीमंधरफुरमावेरे ।

॥ सुं० ॥ ५ ॥ इक अवतारी कारजसारीमुक्ति  
नगर मे जोवेरे ॥ सुं० ॥ कुशल सूरि देराउर नगरे  
जुवनपती सुर थावेरे ॥ सुं० ॥ ६ ॥ फागण वदि  
अम्मावश सीधा पूनम दरश दिखावेरे ॥ सुं० ॥  
मणिधारी दिवली मे पूज्यां शंकट सुपने नोवेरे  
॥ सुं० ॥ ७ ॥ रथी जठी नही देख वादसाह बांही  
चरण पधरावेरे ॥ सुं० ॥ वस्त्र अतर पूजा सदगुर  
की रुद्धिशार मन भोवेरे ॥ सुं० ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ अ  
खिल हीर शुचि नवचीरकै प्रवर प्रावरणै खडुगं  
धतः । शकल० ऊँ ह्रीं ॥ श्रीं० ॥ वस्त्र-चोवा-चंदन-  
पुष्पसारं-निर्विपादिते स्वाहाः ॥ दोहा ॥ ध्वज  
पूजा गुर राज की लहके पवन प्रचार । तीन लोक  
के शिखर पर पोहचे सो नर नार ॥१॥ चाल । जिन  
गुण गावत सुरसुंदरी रे । ए चाल । ध्वज पूजन कर  
हरख जरी रे ॥ ध० ॥ सज सोले शिणगार सहेल्यां । श्री  
सदगुर के छार खरीरे ॥ ध० ॥ अपठर रूप सुतन  
सुक लीनी ठम २ पग जणकार करीरे ॥ ध० ॥ १ ॥  
गावत मंगल देत प्रदक्षणा । धन २ आनंद आज घरी  
रे ॥ ध० ॥ निर्धन कूं लखमी बगसावत पुत्र विना जाके  
पुत्र करीरे ॥ ध० ॥ जो जो परतिप परचा देख्या । सुणो  
भविक दिल बीच धरीरे ॥ ध० ॥ फतेमल्ल भरुगतीया  
श्रावग पहली शंका जोर करीरे ॥ ध० ॥ ३ ॥ पर  
तिख देखूं जब मे जाणूं । प्रगट्यां ततखिण तरण

तरीरे ॥ ध० ॥ पुष्प माल शिर केशर टीका अधर  
 श्वेत पोशाख करीरे ॥ ध० ॥ ४ ॥ मांग २ वर बोले  
 बाणी । फरक बलावो गुरु मेघ जरीरे ॥ ध० ॥ फरक  
 उगायो दोय लाख पर । तेरी महिमा नित्त हरीरे  
 ॥ ध० ॥ ५ ॥ गैनचंद गोलेढा कूं तें । परतिख  
 दीनां दरस फरीरे ॥ ध० ॥ विक्रमपुर में थुंच  
 तुभारा । चित्र करावत सुर सुंदरीरे ॥ ध० ॥ ६ ॥  
 थानमह्व लूण्यां पर किरपा । लखमी लीला सहज  
 बरीरे । लखमीपति दूगरुकी साहिव । हुंकी की  
 चुगताण करीरे ॥ ध० ॥ ७ ॥ जो उयगार करचा  
 तें मेरा । दीनी सनमुख अमृत जरीरे ॥ ध० ॥ तेरी  
 कृपा सें सिद्धि पाई । जागे जस अरु जागे जरीरे  
 ॥ ध० ॥ ८ ॥ नूखा नोजन तिसिया पाणी । नरत  
 हाजरी देव परीरे ॥ ध० ॥ विमुख बखत पर सहाय  
 हमारे । ऋद्धिशार की गरज सरीरे ॥ ध० ॥ ९ ॥  
 श्लोक ॥ मृडु मधुरध्वनि खिखणी नादकै ध्वजविधि  
 त्रित विसृतवासकै । शकल० शिखरोपरि ध्वजां आरो  
 पयामि स्वाहाः ॥ दोहा ॥ नट्टारक पदवी मिली,  
 जीते वादी वृंद । कंठ निराजत सरस्वती, जग में श्री  
 जिनचंद ॥ राग आसावरी ॥ अथवा ॥ धनाश्री ॥  
 पूजन जग सुखकारी सुगुरु तेरी पूजा० तेरे चरण  
 कमल बलिहारी सु० । साहसलेम दिह्वीको बादस्या  
 सुण के शोच तिहारी । नट्ट हरायो चरचा करके

चहारक पद धारी ॥ सु० ॥ १ ॥ अम्भावशकी पूनम  
 कीनी चंद उगायो जारी । चढके गगन करीहे चरचा  
 सूरज से तप धारी ॥ सु० ॥ चौदेसे उगणीस साल  
 मे लखनेउ नगर मजारी । गोरा फिरंगी टोपीवाला  
 दिलमें यह बात विचारी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जैन सितं  
 वर देव जा सच्चा पूरे मनसा हमारी । बाणी निक  
 सी राज्य तुमारा होंगेगा इधकारी ॥ सु० ॥ ४ ॥  
 अंधेकी खोली आंख सूरतमें पूजे सब नरनारी  
 कहाँलग गुण वरणमें तेरा तूं ईश्वर जयकारी ॥  
 सु० ॥ ५ ॥ उगणीसे संवत्सर त्रेपन मिगसर  
 मासमजारी । शुक्ल दूज जिन चंद सूरिश्वर खर  
 तरगह आचारी ॥ सु० ॥ ६ ॥ कुशल सूरिके निज सं  
 तानी हेमकीर्ति मनुहारी । प्रति बोध्या जिन कद्री  
 पांचसे जान सहित अणगारी ॥ सु० ॥ ७ ॥ हेम  
 धारु शाखा जब प्रगटी जगमें आनंदकारी । धर्म  
 शील साधू गुण पूरे कुशल निधान उदारी ॥ सु० ॥  
 ॥ ८ ॥ या पूजन करतां सुख आनंद अन धन  
 लखनी सारी । कहत रामऋद्धिसार गुरुकी जय श  
 शब्द उचारी ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति श्री समस्त दादा  
 गुरु पूजा सम्पूर्ण ॥



## श्रीदादाजीकी अष्टप्रकारी पूजा ॥

सकल गुणगरिष्ठान् सत्तपोन्निर्वरिष्ठान् । शम  
दमयमनुष्ठांश्चारुचारित्रि निष्ठान् । निखिल जगति  
पीठे दर्शितात्म प्रज्ञावान् । मुनिप कुशलसूरीन्  
स्थापयाम्यत्र पीठे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं जिन  
कुशल सूरि गुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ इति  
आवाहनं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं जिन कुशल सूरि  
गुरो अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्वाहा ॥ इति प्रति  
ष्ठापनं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं जिनकुशल सूरिगुरो  
अत्र मम सन्निहितोन्नव वषट् इति सन्निधी करणं । ३।

## अथ अष्टप्रकारी पूजा ॥

( दोहा ) गंगाजल तिम नृवलवलि । तीर्थोदक  
चरपूर । कलशचरी गुरु चरणपर । ढालै तस दुःख  
दूर ॥ १ ॥ ( ढाल ) देशी सूरती महीनांनी ॥  
गंगाजल अति निरमल अमलसुं कमलें पूर । खीरो  
दधि वरदधि ज्यौं उज्जाल जल भरपूर । तेह उद-  
कवलि तीर्थ नीर चरि कलश सनूर । गुरुचरणे  
जे ढालै ढालै दुकृतदूर ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं जिन  
कुशलसूरिगुरु चरणकमलेभ्यः जलं निर्वपामिते  
स्वाहा ॥ इति जलपूजा ॥

## चंदन पूजा ॥

वावन्ना चंदन अग्र । घस केसर घन सार ।  
 चरचै जे गुरु चरणे । पांमें जै जैकार ॥ १ ॥  
 ( ढाल ) मलयागर तिम अग्र चंदन बलिकेसर  
 सार । कस्तूरी अतिगंधै पूरी घस घनसार । कु-  
 शल सूरि गुरुचरणे चरचै चढतै चाव । सकल  
 रोग तन सोग हरै बलि जम्ता चाव ॥ २ ॥ ॐ  
 ह्रीं श्रीं श्रीं जिन कुशल सूरिगुरुचरणकमलेच्यः  
 चंदनं निर्वपामिते स्वाहा ॥ ३ ॥ इति चंदन पूजा ॥

## पुष्प पूजा ॥

केतकि चंपक फूलथी । पूजै जे गुरुपाय । तसु  
 जशसूर उदैहुवै । अपजश तिमिर नसाय ॥ १ ॥  
 ( ढाल ) चंपक केतकि मरुचो दमन सेवन्ती फूल ।  
 जाई जूई मोगरो मालती तेम उकूल । कमल गुलाव  
 चंपेली वेली परमलपूर । गुरुचरणे जे ढोवे होवे  
 जश ज्युं सूर ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं जिन कुशल  
 सूरिगुरुचरणकमलेच्यः पुष्पं निर्वपामिते स्वाहा ॥  
 इति पुष्पपूजा ॥

## अक्षत पूजा ॥

उज्जाल ज्यो शशि अंकविण । खंमित नहीं  
 विशाल । अक्षत गुरुचरणे ठवे । तसु घर मंगल  
 माल ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ सरल सुगंधित तंडुल



उज्ज्वल जल उत्पन्न । ज्य्वरं मोती आना हुंती  
 उज्ज्वलवन्न । जलधोई ससमोई सोई अक्षत नव्य ।  
 स्वस्तिक कुशल वधावै पावै संगलक्षव्य ॥ १ ॥ ॐ  
 ष्ठीं श्रीं श्रीं जिनकुशल सूरिगुरुचरणकमलेज्यः ।  
 अक्षतं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ इति अक्षतपूजा ॥

## दीप पूजा ॥

कंचन मणिमय रत्ननी । दीवी कर घृतपूर ।  
 वाती मौली सूतधर । करौ प्रदीप सुनूर ॥ १ ॥  
 (ढाल) कंचन घटित जटित गति नानाविध नवरत्न।  
 दीवी अतिकारीगर कीवी अधिकै यत्न । घृतपूरी  
 ससनूरी मौली वाती जोय । दीपकरै गुरु आगै ज्योत  
 उद्योती होय ॥ १ ॥ ॐ ष्ठीं श्रीं श्रीं जिन कुशल सूरि  
 गुरुःचरण कमलेज्यः दीपं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥  
 इति दीपपूजा ॥

## धूप पूजा ॥

वायव्या चंदन अगार । सेद्वारस घनसार । धूपै  
 जे गुरु धूपथी तस घर रिध विस्तार ॥ १ ॥ (ढाल)  
 अगार चंदन सेद्वारस ठाक छकीलो मेल । कपूर का-  
 चरी बलि घनसारै मृगखद जेल । धूप अरुंग करी गुरु  
 धूपै चढते चित्त । ते नरवित्त सुमारग पाभैं नव नव  
 नित्त ॥ १ ॥ ॐ ष्ठीं श्रीं श्रीं जिन कुशल सूरिगुरु चरण  
 कमलेज्यः धूपं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ इति धूपपूजा ॥

## नैवेद्य पूजा ॥

साल दाल पकवान घन । व्यंजन नव नव भांत ।  
 नेवज गुरु आगल ठवै । क्षुधा दोष उपसांत ॥ १ ॥  
 ( दाल ) पेना मगद सेवश्या लारू मोतीचूर । खाजा  
 ताजा लापसी दोठानें घृतपूर । पिस्ता दाख विदाम  
 तुहारा पिंखजूर । गुरुचरणे जे ढोवै जोग लहै नरपूर  
 ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण  
 कमलेज्यः नैवेद्यं निर्व्वपामिते स्वाहा इति नैवे-  
 द्यपूजा ॥ ७ ॥

## फल पूजा ॥

श्रीफल सीताफल सदा । फल पुंगीफल लेघ ।  
 ढोवै जे गुरु चरणपर । तसु उत्तम फल देय ॥ १ ॥  
 ( दाल ) श्रीफल सीताफल नारंगी ढारुम दाख ।  
 म्हरवृजा तरवृज जजेरी पाखी साख । करुणा क-  
 वला केला नीवू फनस संफार । गुरु चरणे फल ढोई  
 फल पामें श्रीकार ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिन कु-  
 शल सूरिगुरुः चरणकमलेज्यः । फलं निर्व्वपामिते  
 स्वाहा ॥ इति फल पूजा ॥

## अर्घ्य पूजा ॥

( अथ कलश ) दोहा । इम जिन कुशल सुरिंदनें  
 पूजै अष्ट प्रकार । तसु घर नवनिधि संपजै । पुत्रादिकं  
 परिवार ॥ १ ॥ नद्वारक खरतर गत्रै । श्रीजिन स्नात्र-

सुरिंद ॥ रत्नराजमुनि भमरपर । सैवै पद अरविंद श ॥  
 तासुचरण रजकणसमो । ग्यांन सार बुद्धिमंद ॥ श्री-  
 सदगुरु पूजारची । सोधो कविजन वृंद ॥ ३ ॥ इति  
 श्री जिनकुशल सुगुरूणां अष्टप्रकारी पूजा ॥

### अथ दधु अष्टप्रकारी पूजा लि० ॥

सुरनदी जल निर्मल धारया । प्रवल दुष्कृत दाध  
 निवारया । सकल मङ्गल वंठित दायकं । कुशल सूरि-  
 गुरोश्चरणांजये ॥ १ ॥ ॐ न्हीं श्री श्रीजिनकुशल सूरिः  
 चरण कमलेच्यो जलं० यजामहे स्वाहा ॥

### अथ चंदन पूजा ॥

मलय चंदन केशर वारिणा । निखल जाड्यरुजा  
 तप हारिणा । सकल० ॥ १ ॥ ॐ न्हीं श्री श्रीजिन  
 कुशल सूरि गुरुः चरणकमलेच्यो चं० यजा० स्वाहा ॥

### अथ पुष्प पूजा ॥

कमल केतकि चंपक पुष्पकैः । परिमला हृत षट्  
 पद वृंदकैः ॥ सकल० ॥ ३ ॥ ॐ न्हीं श्री श्री जिन  
 कुशल सूरि गुरुः० ॥ पुष्पं यजा० स्वाहा ॥ ३ ॥

### अथ अक्षत पूजा ॥

सरल तंडुल कैरित निर्मलै । प्रवर मोक्तिक पुंज-  
 वदुज्वलैः । सकल मङ्गल० ॥ ॐ न्हीं श्री० जिन०  
 गुरु० चरण० अक्षतं यजामहे स्वाहाः ॥

## अथ नैवेद्य पूजा ॥

बहुविधैश्चरुर्जिर्वटकैर्यकैः । प्रवर मोदक पुंज सु  
खर्जकैः । सकल मङ्गल ॥ ॐ न्हीं श्रीं जिनकुं  
सूरिं गुरं चरणं नैवेद्यं यजामहे स्वाहाः ॥

## अथ दीप पूजा ॥

अति सुदीप्तमयै खलु दीपकैः । विमल कंचन  
भाजन संस्थितैः । सकल मङ्गल ॥ ॐ न्हीं श्रीं जिनं  
सूरिं गुरं चरणं दीपं यजामहे स्वाहाः ॥

## अथ धूप पूजा ॥

अगर चंदन धूप दशांगजैः । प्रसरिता खिल दिह्यु  
सुभूमकैः । सकल मङ्गल ॥ ॐ न्हीं श्रीं जिनं सूं  
चरणं धूपं यजामहे स्वाहाः ॥

## अथ फल पूजा ॥

पनशमोच सदा फलकर्कटैः । सुसुखदैः किल  
श्रीफल चिर्जटैः । सकल मङ्गल ॥ ॐ न्हीं श्रीं  
जिनं सूं चरणं फलं यजामहे स्वाहाः ॥

## अथ अर्घ्य पूजा ॥

जल सुगंध प्रसून सुतंडुलैश्चरु प्रदीपक धूप  
फलादिभिः । सकल ॥ ॐ न्हीं श्रीं । श्रीजिनं  
कुशल सूरिं । अर्घ्यं यजां स्वाहा ॥ इति ॥

॥ मंदिर में दर्शन करनेकी विधिः ॥

इच्छामिखमा० नमुहृणं० उवसग्ग० जयवीथ० का  
उसग्ग के तीन नत्रकार गीणना-वाद थुई कहना

## अथ अष्टमीस्तुतिः

चउवीसे जिनवर, प्रणमुं हुं नितमेव ॥ आठम  
दिन करियें, चंद्रप्रचुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे  
जाणे पुनिम चंद ॥ दीगां दुःख जाये, पामे परमा-  
नंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रचुजीना पाय ॥  
इंद्राणी अपठर, कर जोनी गुण गाय ॥ नंदीश्वर  
छीपें मिलि सुरवरनी कोरु ॥ अछाइ महोठव,  
करता होरा होरु ॥ २ ॥ शेत्रुंजा शिखरें, जाणी लाज  
अपार ॥ चउनासें रहिया, गणधर मुनि परिवार ॥  
नवियणने तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध साकरथी  
पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पम्किमणुं  
करियें व्रत पच्चरकाण ॥ आठम तय करतां, आठ  
करमनी हाण ॥ आठ मंगल थाये, दिन दिन कोनि  
कढ्याण ॥ जिन सुखसूरि कहे, इम जीवत जनम  
प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

## ॥ शत्रुंजय स्तवन ॥

शेत्रुंजय ऋषज समोसरया । जला गुण जरयारे ।  
सीधा साधु अनंत । तीरथ ते नमुरे । तीन कढ्या-  
णक तिहां थया । मुगतें गयारे । नेमीसर गिर-

नार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो । गिरि सेह  
 रोरे । नरतं नराव्या विंव ॥ ती० ॥ आवृ चैमुख  
 अतिचलो । त्रिचुवन तिलोरे । विमल वसइ वस्तु  
 पाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो । रली  
 यामणोरे । सीधा तीर्थकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी  
 चंया निरखीये । हीये हरखीयेरे । सीधा श्री वासु  
 पूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशं पावापुरी । ऋद्धं नरीरे  
 मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेशलमेर जुहारीये  
 दुःख वारीयेरे । अरिहंत विंय अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥  
 वीकानेरज वंदीये । चिरनंदीयेरे । अरिहंत देहरा  
 आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो शंखेश्वरो । पंचासरोरे ।  
 फलोधी थंभणपाश ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरीक अंजा-  
 वरो । अमीऊरोरे । जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥  
 त्रैलोक्य दीपक देहरो । जात्रा करोरे । राणापुरं  
 रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाशोलाई जादवो । गोमी  
 स्तंघोरे ॥ श्रीवरकाणो पाश ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां  
 देहरा । वावन जलारे । रुचक कुंभले चार चार ॥ ती०  
 ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती । प्रतिमा ठतीरे । स्वर्ग  
 मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्राफल तिहां ।  
 होजोमुज इहांरे । समय सुंदरकहे एम ॥ ती० ॥ ८ ॥

अथ श्री पार्श्वजिन स्तवन ।

जय २ श्रीजिन राय । जग जन अन्तर जामी ।  
 तारण तरण जिहाज । परमात्म परिणामी ॥ १ ॥

परम पुरुष परमेस । परमानंद प्रधान । परम प्रकाश  
 विसेस । निरमल ज्ञान निधान ॥ १ ॥ जगपति पा  
 स जिणंद । प्रभु तुह्य हो उपगारी । सुनिधै सेवक  
 जान । औसी अरज हमारी ॥ ३ ॥ मोह महामद  
 चूझि । में बहुकाल गमायो । निज परजाव विवेक ।  
 सुद्ध सुभाव नपायो ॥ ४ ॥ निरमल चेतन भाव ।  
 कर्म कलंकित कीनो । ताकारण गुण ठोडि । पर औ  
 गुण चित दीनो ॥ ५ ॥ निज अवगुण सुणिकान ।  
 दिलमें रोस जराजं । अठता निज गुणगान । सु  
 निवैकुं उमाहूं ॥ ६ ॥ आश्रव पांचे असुद्ध । दिलसं  
 दूर न जावै । कुमति कदाग्रह जोग । समता सुद्ध  
 न आवै ॥ ७ ॥ अव कतु पुण्य संयोग । प्रभु तुह्य  
 मुद्रा देखी । सुद्ध अध्यातम लीन । जाव असुद्ध  
 उवेखी ॥ ८ ॥ निरखि श प्रभुविंव । मनमें आनंद  
 पाजं । गाजं तुजगुणग्राम । देव अवर नवि चाहूं ॥ ९ ॥  
 करुणाकरि प्रभुमुज । आतम निरमल कीजै । सुद्ध  
 दसा प्रगटाय । मोह विकलता ठीजै ॥ १० ॥ जव श  
 निजपद सेव । प्रभु सेवककुं दीजै । श्री जिन जक्ति  
 पसाय । सुमति विलाश वरीजै ॥ ११ ॥ इति श्री  
 पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ४ ॥

अथ श्रीमहावीरजिन ठंद ॥

सेवो वीरनें चित्तमां नित्यधारो । अरिक्रोधनें म  
 न्मथी दूरवारो । संतोष वृत्ती धरो चित्तमांदिं । राग

द्वेपथी दूर थाओ उठांहीं ॥ १ ॥ पड्या मोहना पा-  
 समां जेह प्राणी । शुद्ध तत्वनी वात तेणें न जाणी  
 मनु जन्म पामी वृथा कां गमोठो । जैन मार्ग ठंकी  
 जुलाकां जमोठो ॥१॥ अलोत्री अमानी निरागी त-  
 जोठो । सलोत्री समानी सरागी जजोठो । हरी ह-  
 रादि अन्यथी शुं रमोछो । नदी गंग मूकी गलीमां  
 पडोठो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथें असि चक्र धारा । केइ  
 देव घाले गले रुंरुमाला । केइ देव उत्संगें राखे ठे  
 वामा । केइ देव साथें रमें वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव  
 जपे ले ई जपमाला । केइ मांसजङ्गी महाविक्रमाला ॥  
 केइ योगिणी जोगिणी जोगरागें । केइ रुद्राणी ठा-  
 गनो होम मांगे ॥ ५ ॥ इसा देव देवी तणी आश  
 राखे । तदा मुक्तिनां सुःखने केम चाखे । जदा लो-  
 जना थोकनो पार नाव्यो । यदा मधनो विंदुओ म-  
 झजाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवळां आपणी आश राखे । तेह  
 पिंरुनें मझशुं लेअ चाखे । दोन हीननी नीरु ते केम  
 जाजे । फुटो ढोल होये कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे  
 मूढ आता जजो मोह दाता । अलोत्री प्रचूने जजो  
 विश्वख्याता । रत्न चिंता मणि सारिखो एह साचो ।  
 कलंकी काचना पिंरुशुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंद बुद्धी  
 जेह प्राणी कहे छे । सवि धर्म एकत्व चूखो जमेठे ।  
 कीहां सर्पवाने कीहां मेरु धीरं । कीहां कायरानें  
 कीहां शूरवीरं ॥ ९ ॥ कीहां स्वर्णधालं कीहां कुंज-



आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ राय नें रंक सरिखा गणैरे ।  
 उद्योतें शशि सूर । गंगाजल ते विहु तणारे । ताप  
 करे सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तार-  
 वा रे । तिम तुमे ठो महाराज । मुजशुं अंतर किम  
 करो रे । बांह ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख  
 देखी टीकुं करे रे । तेनवि होय प्रमाण । मुजरो  
 माने सवि तणो रे । साहिव तेह सुजाण ॥ जि० ॥  
 ६ ॥ वृषजलंछन माता सत्यकी रे । नंदन रुद्रमणी  
 कंत । वाचक जश इम वीनवे रे । जय जंजन जग  
 वंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति ॥

## अथ श्रीराणकपुरजीनुं स्तवन ।

श्रीराणपुरो रक्षीयामणुरे लाल । श्रीआदीसर  
 देव । मन मोहुरे । उत्तंग तोरण देहरे ला० ॥ नि  
 रखीजे नित्यमेव ॥ म० ॥ १ ॥ अठवीश मंरुप चिहुं  
 दिशैरे ला० ॥ चतुमुख प्रतिमा चार ॥ म० ॥ त्रि  
 चुवनदीपक देहरैरे ला० ॥ समोवरु नहीं संसार ॥  
 म० ॥ श्री० ॥ २ ॥ देहरी चोराशी दीपतीरे ला० ॥  
 मांड्यो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ जले जुहात्या जौय-  
 रारे ला० ॥ सूतां जठी सवेर ॥ म० ॥ श्री० ॥ ३ ॥  
 देश जाणीतुं देहरे ला० ॥ मोटो देशमेवारु ॥ म० ॥  
 लख्ख नवःणुं लगावियारे ला० ॥ धन धनो पोर-  
 वारु ॥ म० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ खरतर वसई खांत-  
 शुरे ला० ॥ निरखंतां सुख थाय ॥ म० ॥ पांच

